Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri 38070

...रिद्वार
38070
इस तिथि
आ जानी
...ब्र दण्ड

दादासाहब मावलंकर

श्रद्धांजलियां

इन्द्र विद्यावाचस्पति
चन्द्रलोक, जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को
भेंट

लोक-सभा सचिवालय,

नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टाक प्रमाणीकरण १९८४-१९८५

वे लोक-सभा के प्रथम अध्यक्ष—लोक-सभा के पिता—थे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उनका नाम लोक-सभा के साथ, हमारी संसद् के साथ, बहुत समय तक उस व्यक्ति के रूप में सम्बद्ध रहेगा, जिसने इसे यह रूप दिया, इसका दिग्निर्देश किया और इसके ऊपर अपने व्यक्तित्व की एक अमिट छाप छोड़ी।

—जवाहरलाल नेहरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
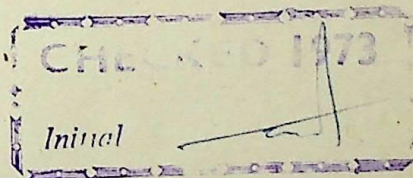
आमुख

२७ फरवरी, १९५६ को भारत गणराज्य की प्रथम ससद् के प्रथम अध्यक्ष श्री गणेश वासुदेव मावलंकर का देहावसान हो गया। दादासाहब मावलंकर की प्रथम वर्षी के इस अवसर पर हम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, तथा भारत और विदेशों के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा उनके प्रति अर्पित श्रद्धांजलियों तथा लोक-सभा सचिवालय में प्राप्त शोक संदेशों का यह संकलन प्रकाशित कर रहे हैं। यह मूल अंग्रेजी का हिन्दी अनुवाद है।

नई दिल्ली,
२७ फरवरी, १९५७।

महेश्वर नाथ कौल,
सचिव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री मावलंकर के प्रति राष्ट्रपति की श्रद्धांजलि

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने स्वर्गीय श्री मावलंकर के प्रति २७ फरवरी, १९५६ को आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित अपने भाषण में मार्मिक श्रद्धांजलि अर्पित की। उनके भाषण का पाठ नीचे उद्धृत किया जाता है :

श्री मावलंकर की मृत्यु का दुःखद समाचार सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ है। मैं उन्हें पिछले ३५ वर्षों से असहयोग आन्दोलन के शुरू के दिनों से जानता हूं। राजनैतिक आन्दोलन तथा स्वातन्त्रय संग्राम में, जिसके लिये उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा, उन्होंने जो रुचि दिखाई, उसके अतिरिक्त समाज-सेवा सम्बन्धी कई संस्थाओं में भी वह गहरी रुचि लेते थे।

अहमदाबाद में उन्होंने एक वकील के नाते तथा कांग्रेस क्षेत्र में ही अच्छा नाम नहीं कमाया अपितु जिस किसी चीज़ में भी उन्होंने भाग लिया उसी में उन्हें अच्छी सफलता मिली। वे बम्बई विधान-सभा के अध्यक्ष बने और वहां के कार्य पर अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ी। अध्यक्ष के रूप में जो सफलता उन्हें मिली उसने उन्हें केन्द्रीय विधान मंडल का अध्यक्ष चुनने के लिये सदस्यों को प्रेरित किया। जब से वे दिल्ली आए तभी से वे संसद् के आवश्यक अंग बन गये।

लोक-सभा के उन सभी सदस्यों ने जिन्होंने उन्हें श्रद्धांजलियां अर्पित की हैं, उनकी योग्यता एवं दृढ़ता में न केवल अपने दल के पूर्ण विश्वास का उल्लेख किया है, अपितु उन प्रक्रियाओं का भी वर्णन किया है जिनके आधार पर उन्हें सदन के कार्यक्रम को संचालित किया है। उन्होंने अपना स्थान एक महान् अध्यक्ष के रूप में न केवल अपने देश में ही अपितु राष्ट्रमंडलीय संसदीय क्षेत्र में भी बना लिया था।

जो भी काम उन्होंने शुरू किया वह पूरी सावधानी से निभाया। सभी वर्गों का उन्हें विश्वास प्राप्त या और देश में जनता द्वारा चालू किये गये बड़े से बड़े सार्वजनिक न्यासों का उन्हें निःसंकोच और एक-मत से प्रभारी बनाया गया।

गांधी स्मारक निधि तथा कस्तूरबा ट्रस्ट एवं अन्य बहुत सी सामाजिक संस्थाओं के अध्यक्ष के रूप में वे विभिन्न प्रकार के कार्यों में लगे रहते थे और इन विभिन्न न्यासों द्वारा चलाई जाने वाली संस्थाओं के द्वारा एक प्रकार से सारे देश में फैले हुए थे।

वे कभी खाली नहीं बैठे। हालांकि यह सर्वविदित था कि उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था, किंतु जब संसद् का अधिवेशन नहीं होता था तो अधिकतर वे भ्रमण करते रहते थे और विभिन्न संस्थाओं का निरीक्षण करते थे और संसदीय कार्य एवं उससे संबन्धित संस्थाओं की चर्चा तथा बैठकों में भाग लिया करते थे। उनकी क्षति का अनुभव केवल लोक-सभा में ही नहीं किया जायेगा, अपितु समाज-सेवा करने वाले मित्रों, सहयोगियों, एवं साथियों के वृहत् क्षेत्र में भी यह कभी अखरेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ दिन पूर्व जब उनकी बीमारी का आकस्मिक समाचार मिला, तो संभवत: बड़ी चिंता हुई किंतु बाद के समाचार अच्छे मिले और यह आशा हो गई कि जनता और देश की सेवा करने के लिये वे हमारे बीच बने रहेंगे। किंतु यह हमारा बड़ा दुर्भाग्य है कि ऐसा नहीं हुआ और उनकी मृत्यु हो गई और इस प्रकार हमारे सावजनिक जीवन में अब उनके न रहने से एक ऐसी कमी आ गई है, जिसकी पूर्ति करना कठिन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसद् में दी गई श्रद्धांजलियां

जब २७ फरवरी, १९५६ को स्वर्गीय श्री ग० व० मावलंकर, अध्यक्ष के आकस्मिक निधन का समाचार नई दिल्ली पहुंचा तो संसद् के दोनों सदनों में मार्मिक श्रद्धांजलियां पेश की गईं। संसद् के दोनों सदनों के विभिन्न वर्गों के नेताओं द्वारा दिये गये भाषणों का पूरा पाठ दिया जाता है।

लोक-सभा

प्रधान मंत्री तथा सदन के नेता (श्री जवाहरलाल नेहरू) : सभी ओर से हमारे ऊपर मुसीबतें आ रही हैं। ऐसा लगता है कि दुर्भाग्य हमारा पीछा कर रहा है। यह मेरा दुर्भाग्य है कि लोक-सभा के निकट बार-बार दुःखद समाचार लेकर मुझे आना पड़ता है।

आज प्रातः पौने नौ बजे हमारे अध्यक्ष के पुत्र से मुझे टेलीफोन पर समाचार मिला कि उनके पिता का ७ बज कर ५० मिनट पर देहावसान हो गया है। उन्होंने बताया कि वैसे तो कल उनके पिता की दशा अच्छी थी, किन्तु फिर भी उनकी मृत्यु हो गई।

पिछले कुछ दिनों से हमें उनके स्वास्थ्य के बारे में चिंता थी और भय था। मेरी आशंका थी कि यह स्थिति बहुत दिन बाद आयेगी, किंतु ऐसा मालूम न था कि यह इतनी जल्दी आ जायेगी। पर हमारे अध्यक्ष अब जीवित न रहे।

नौ वर्ष हुए जब मेरे साथ कुछ लोगों ने इन विधान-सभाओं में कार्य करना आरम्भ किया था। इस नौ वर्ष की अवधि में कुछ दिन पुरानी विधान-सभा रही फिर संविधान-सभा और फिर यह लोक-सभा आयी। इस अवधि के प्रारंभिक दिनों में जो बड़ी कठिनाई के दिन थे और एक प्रकार से सूत्रपात के ही दिन थे, श्री मावलंकर ने हमें रास्ता दिखाया, हमारी सहायता की, हमारी भूलें बताईं, हमें सही रास्ता दिखाया, ऐसे पूर्वोदाहरण स्थापित किये, जिनका अनुसरण भविष्य में किया जायेगा; तथा भारत में और विशेषतः लोक-सभा में संसदीय जीवन का विकास किया। दूसरी ओर वे राज्य विधान-सभाओं के अध्यक्षों का सम्मेलन बुलाया करते थे और उनके साथ समान हित के विभिन्न मामलों पर चर्चा किया करते थे, क्योंकि वे यह चाहते थे कि संसदीय सरकार की नींव सुदृढ़ और ठीक ढंग से रखी जाये। उन्हें बहुत अनुभव था, जैसा कि आप जानते हैं कि वे पुरानी विधान-सभा के भी अध्यक्ष थे और उन्होंने वहां बहुत दिनों तक कार्य किया था। कुछ दिनों पश्चात् हम सब उनके निकट सम्पर्क में आये और हमने उनकी देख-रेख में कार्य किया।

मैं यह स्वीकार करता हूं, मैं ही क्या हममें से कुछ और भी यह स्वीकार करते हैं कि हमारा उन पर अध्यक्ष के नाते बड़ा भरोसा था; हमारा विश्वास था कि चाहे कैसी भी परिस्थिति क्यों न आये, वह उसका सामना शांति से, सहानुभूति से, तथा ऐसी दृढ़ता से करेंगे कि हम उनके बिना इस संसद् की बात ही नहीं सोच सकते थे, वे इसके अभिन्न अंग थे और हम सबको मिलाने वाली कड़ी थे। उनकी मृत्यु व्यक्तिगत दुःख और शोक के अतिरिक्त एक ऐसी प्रथा एवं परिपाटी से विछोह है, जो यहां बन गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें तो कोई संदेह की बात नहीं है कि संसद् तथा हम सभी अपना कार्य करते रहेंगे। संसार के काम तो चलते ही रहते हैं। संसद् का कार्य भी चलता रहता है। इसमें भी कोई शक़ नहीं है कि भारत का भी काम चलता है। कोई भी व्यक्ति क्यों न हो वह अपरिहार्य नहीं होता। किन्तु बात यह है कि संसद् के लिये यदि कोई व्यक्ति अभिन्न है, अपने कार्य के आधार पर यदि कोई व्यक्ति अतुलनीय है, तो वे थे श्री मावलंकर, और उनकी मृत्यु तो एक क्षण के लिये लोक-सभा को एक प्रकार से मुखिया-रहित बना देती है और उनकी मृत्यु ने एक ऐसा अभाव उत्पन्न कर दिया है, जिसकी पूर्ति करना कठिन है।

हम में से बहुत से व्यक्ति दूसरी तरह से अध्यक्ष श्री मावलंकर के संपर्क में आये, प्रत्यक्ष रूप से राजनैतिक क्षेत्र में नहीं, किन्तु अच्छे कामों में उनकी रुचि के कारण। उनका सम्बन्ध गांधी-स्मारक निधि और कस्तूरबा-स्मारक निधि से था, जिनका उद्देश्य जनसेवा करना था। इन बड़ी-बड़ी निधियों की देखभाल करना एवं यह देखना कि उनका उपयोग जनसेवा के लिये हो रहा है अथवा नहीं, काफी भार का कार्य था। उन्होंने इस कार्य के लिये काफी समय दिया और स्वभावतः दूसरे लोगों ने भी उनकी इस कार्य में सहायता की। किन्तु सच तो यह है कि, वही यह देखा करते थे और छोटी से छोटी बातों पर भी ध्यान दिया करते थे। मैं यह स्वीकार करता हूं कि मुझे उनकी यह लगन देखकर आश्चर्य होता था कि वह किस प्रकार इन निधियों के कार्य संचालन की छोटी से छोटी बातों की गहराई में जाते थे एवं यह देखते थे कि उस धन का सदुपयोग हो रहा है अथवा नहीं। निधियों के सम्बन्ध में मैं यह और बता देना चाहता हूं कि हम में से कुछ तो उनकी लगन की परिपूर्णता से अधीर हो उठते थे, क्योंकि उनकी परिपूर्णता के कारण निर्णय करने में देर हो जाया करती थी। किन्तु यह अच्छी बात थी कि वे इतने पूर्ण थे। मैं समझता हूं कि संभवतः यह अच्छी बात होगी, यदि हम भी इस प्रकार के तथा अन्य प्रकार के मामलों में उन्हीं की तरह परिपूर्ण बनें।

फिर भी यहां लोक-सभा में हमारा सम्बन्ध उनसे कई रूपों में विशेषतः अध्यक्ष के रूप में था। लोक-सभा के वे पहले अध्यक्ष थे, लोक-सभा के वे पिता थे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उनका नाम लोक-सभा और हमारी संसद् के साथ भविष्य में उस व्यक्ति के रूप में जुड़ा रहेगा, जिसने इसको बनाया, इसका दिशा-निर्देश किया और इस पर अपने व्यक्तित्व की मुद्रा और अपना प्रभाव छोड़ा। हम सभी को उससे लाभ पहुंचा है; कुछ हद तक हम उससे प्रतिबद्ध रहे हैं, हम सभी ने इससे कुछ सीखा है। किसी व्यक्ति के बारे यह कहना एक बड़ी बात है कि अपने सम्पर्क में आने के कारण उन्होंने दूसरों को बनाया, उनमें सुधार किया और अपने व्यक्तित्व की छाप उन पर छोड़ी। हमारे द्वारा उन्होंने लोक-सभा तथा संसद् पर अपना प्रभाव छोड़ा और कुछ हद तक उनके द्वारा सारे देश को प्रभावित किया।

अतः हम आज दुःखी हैं और एक प्रकार से अकेले से रह गये हैं। मैं तो यही कहूंगा कि आप हमारे दुःख और सहानुभूति की भावनाओं को उनके परिवार तक पहुंचायेंगे। निःसंदेह आप तथा सभा यह पसंद करेगी कि आज सभा को स्थगित कर दिया जाये।

श्री ही० ना० मुकर्जी : श्री मावलंकर के निधन पर प्रधान मंत्री ने जो दुःख प्रगट किया है, मैं अपने दल की ओर से उसमें उनके साथ हूं।

यह सत्र एक प्रकार से हमारे लिये एक निर्दय मृत्यु-वाहक है और एक आघात के पश्चात् दूसरा आघात हमारे सामने आ रहा है और जिससे हमारे सम्मुख दूसरा व्यक्ति चुनने की ऐसी राष्ट्रीय समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं जिनकी पूर्ति करना, मैं समझता हूं, आसान नहीं है।

जहां तक हमारे अध्यक्ष का सम्बन्ध है, मैंने आज प्रातः काल ही उनके स्वास्थ्य के बारे में समाचार-पत्रों में पढ़ा था और हमें आशा थी कि वे जल्दी ही ठीक हो जायेंगे, किन्तु ऐसा नहीं हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोधी दल के सदस्य के नाते बोलते हुये मैं समझता हूं कि हम में से बहुतों के लिये यह एक वास्तविक और दुःखदायी आघात है और यह सोचा भी नहीं जा सकता कि भविष्य में हम सदन में उनको इस आसन पर नहीं देख सकेंगे, उनकी महानता का अनुभव नहीं कर सकेंगे, उनके शानदार व्यक्तित्व के संपर्क में न आ पायेंगे और उनकी प्रतिभा नहीं देख सकेंगे। मुझे याद है कि प्रधान मंत्री ने इस संसद् के प्रथम सत्र में सम्भवतः कहा था कि सदन में इस पद के लिये किसी और दूसरे व्यक्ति के बारे में सोचा नहीं जा सकता अर्थात् और कोई दूसरा व्यक्ति उपयुक्त नहीं है। श्री मावलंकर के साथ हमारे मतभेद थे, किन्तु जहां तक हमारे व्यक्तिगत सम्बन्धों की बात है, कभी भी उनमें तीखापन नहीं आया। और ऐसे अवसर भी आये जिनमें हमने उनकी भावनाओं को इस प्रकार पाया, जो बहुत कम व्यक्तियों में होती है—कम से कम मैं तो किसी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में नहीं आया जिसमें इस प्रकार की भावना रही हो—और वह भावना यह थी कि हमारे देश में संसदीय परम्परायें ऐसी बनें जो हमारी राजनीतिक परम्पराओं से मेल खायें और इस परम्परा को बनाने के लिये उन्होंने अपनी पूरी-पूरी योग्यता लगा दी—और इसके लिये उनमें अपार प्रतिभा थी, और प्रत्येक व्यक्ति जो उनको जानता है इस बात का अनुमोदन करेगा। यही कारण है कि मैं यह अनुभव करता हूं कि वह एक ऐसे व्यक्ति थे, जिस प्रकार के व्यक्ति को हम फिर कभी आसानी से नहीं देख पायेंगे और यही कारण है कि हमारा दुःख बहुत गहरा और वास्तविक है। विशेष रूप से मैं अपने दल की ओर से तथा इस सभा के प्रत्येक सदस्य की ओर से श्री मावलंकर के परिवार के सदस्यों को यह संदेश भेजता हूं कि हमारे राष्ट्रीय जीवन के इस अवसर पर श्री मावलंकर के निधन से जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति नहीं हो सकती।

श्री अशोक मेहता : उपाध्यक्ष महोदय मैं भी श्री मावलंकर के निधन पर प्रकट की गई इन शोक-पूर्ण भावनाओं को प्रगट करने में अपने पूर्ववक्ताओं के साथ हूं।

श्री मावलंकर अहमदाबाद में मेरे बाबा के बहुत गहरे दोस्त थे। अतः हम लोगों का सम्बन्ध कई वर्षों तक रहा। वर्तमान अहमदाबाद के बनाने वालों में से वे एक थे। उस नगर के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में श्री मावलंकर की एक अनोखी छाप है। सरदार पटेल के पश्चात् सम्भवतः अहमदाबाद के बनाने वालों में श्री मावलंकर का नाम आता है। बम्बई विधान-सभा के प्रारम्भिक दिनों में अध्यक्ष के रूप में उन्होंने मेरे राज्य को संसदीय प्रजातन्त्रीय ढांचे में ढालने के लिये निर्देश देने में सहायता की।

जब दो वर्ष पहले मैं यहां आया था तो मैंने देखा कि नये सदस्यों को सुझाव देंने और उनकी रहनुमाई करने के लिये वह सदैव ही तैयार रहते थे।

इस सभा में विरोधी दल कमज़ोर और अव्यवस्थित है किन्तु वह सदैव ही हमारे आश्रय थे। वह हमारे अधिकारों की रक्षा करने वाले थे। वे हमारे ऐसे अधिकारों की रक्षा करते थे, जिनके बारे में हम स्वयं भी कभी-कभी नहीं जानते थे, क्योंकि हम संसदीय जीवन के लिये एक प्रकार से नौसिखिया हैं। भूतकाल में कुछ ऐसे अवसर आये जब हम में से कुछ व्यक्तियों ने उनसे मतभेद प्रकट किया। किन्तु उन बातों को देखते हुये हम इस नतीजे पर पहुंचे कि हम में से अधिकांश गलत रास्ते पर थे, और वह सही रास्ते पर थे। कभी-कभी सदन में किन्तु अधिकतर अपने निजी कक्ष में उन्होंने हमें परामर्श दिया और हमारी रहनुमाई की।

आपको याद होगा कि कुछ दिन पूर्व हमारे नेता, आचार्य कृपालानी ने, उन्हें एक अध्यापक बताया था। वास्तव में यह एक प्रकार से उनका आदर करना ही था, क्योंकि वह अध्यापक भी रहे थे। आपको याद होगा कि कार्य मन्त्रणा समिति की बैठकों में कई ऐसे अवसर आये, जब उन्होंने हमें अविस्मरणीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ पढ़ाया कि किस प्रकार संसद् कार्य करती है और किस प्रकार उसका विकास होता है । जैसा कि प्रधान मंत्री ने बताया है कि संसद् का कार्य तो चलता ही रहेगा, किन्तु क्या यह उसी प्रकार चलता रहेगा जैसा कि उनके नेतृत्व में चलता था । अपनी आगे की कार्यवाहियों के बारे में हम इतने सुनिश्चित नहीं हैं । हम चाहते हैं कि कोई उन जैसा ही व्यक्ति यहां अध्यक्ष पद पर हो, जिसमें चरित्र बल हो, जिसमें शक्ति हो, जिसमें प्रतिभा हो और जिसमें सद्भावना हो और जिसमें सभा के प्रत्येक वर्ग को समझने की शक्ति हो । क्योंकि कार्यपालिका काफी शक्तिशाली है । हम सब लोग बड़े कमज़ोर हैं और राष्ट्र चाहता है कि प्रजातन्त्र की वृद्धि हो। इसलिये आवश्यकता इस बात की है कि अध्यक्ष के पद पर एक ऐसा व्यक्ति हो जिसमें उन जैसी शक्ति और उन जैसी योग्यता हो । दुर्भाग्य की बात है कि जब हमें उनकी इतनी आवश्यकता थी, ऐसे समय में ही उनका निधन हो गया ।

मैं आशा करता हूं कि उनके परिवार के सदस्य यह अनुभव करेंगे कि यद्यपि यह उन के लिये महान् क्षति है, किन्तु उनकी ही नहीं, अपितु यह सारे राष्ट्र की क्षति है और सारा राष्ट्र इस क्षति में उनके साथ है । हममें से प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह उसी प्रकार की व्यक्तिगत हानि है, जिस प्रकार कि उनके परिवार के सदस्यों के लिये है ।

श्री नि० चं० चटर्जी : यह मेरा करुण-कर्त्तव्य है कि श्री मावलंकर के प्रति मैं भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करूं ।

भारत में संसदीय प्रजातन्त्र के विकास के इतिहास में श्री मावलंकर का स्थान बहुत ही सम्मानित और बेजोड़ है । राष्ट्रमंडलीय सम्मेलन के सिलसिले में मुझे लन्दन जाने का सौभाग्य मिला, जहां मुझे ब्रिटिश संसद् के कुछ सदस्यों से मिलने का अवसर हुआ और मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूं कि वह हमारी संसद् तथा हमारे अध्यक्ष की बड़ी प्रशंसा करते थे । यह महान प्रसन्नता की बात है कि संसद्-जननी (ब्रिटिश संसद्) के संसद् विज्ञ हमारे अध्यक्ष को राष्ट्रमंडलीय संसद् संस्था का अध्यक्ष चुनना चाहते थे और उनसे रहनुमाई और योग्यता का पथप्रदर्शन चाहते थे । इस सदन के सदस्य इस संसद् के सदस्य और एक भारतीय के नाते मुझे यह जानकर बहुत गर्व हुआ कि हमारे अध्यक्ष को केवल इसी सभा में ही नहीं, अपितु बाहर विदेशों में भी श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है ।

हमारे उनसे मतभेद थे । हमने कभी उनके विनिर्णयों पर आपत्ति भी की, किन्तु आज उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने में मैं श्री मुकर्जी और श्री अशोक मेहता के साथ हूं, जो उनके प्रति केवल श्रद्धांजलि मात्र है । विरोध दल के सदस्यों के अधिकारों के बारे में वह जागरूक थे और इस सभा के प्रत्येक सदस्य के विशेषाधिकारों के सही अभिरक्षक थे । अधीनस्थ विधान समिति के अध्यक्ष के नाते यह मेरा कर्तव्य है कि मैं आपको यह बता दूं और स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा करूं कि कार्यपालिका की निरंकुशता का उन्होंने बराबर विरोध किया और हमें हर समय सावधान किया कि हम इस समिति के सदस्य ही वास्तव में जनता के अधिकारों के रक्षक हैं और हम यह देखें कि किसी भी रूप तथा आकार में संसदीय प्रभुता और इस पवित्र सदन के सम्पूर्ण प्रभुत्व अधिकारों में कोई कमी तो नहीं आ रही है ।

भारत के इतिहास में यह महीना बहुत ही दुःखदायी है । इस महीने में हमने भारत के महान् वैज्ञानिक को जो हमारे साथी थे खो दिया । हमने आचार्य नरेन्द्र देव को, जो भारत के एक सच्चे सपूत थे, खो दिया । वर्तमान भारत के एक श्रेष्ठतम न्यायवेत्ता को भी हमने इस महीने में खोया है जो भारत में मुख्य न्यायाधिपति थे । और आज हम एक ऐसे महान् व्यक्ति के निधन पर, जिसको प्रधान मंत्री ने इस सभा का पिता कहा है, शोक प्रकट कर रहे हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुतः विरोधी सदस्यों के नाते यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम इस बात को स्वीकार करें कि यद्यपि वह अपने विचारों में दृढ़ और पक्के थे, फिर भी वे भारत में संसदीय प्रजातन्त्र को सही रूप देने वाले थे। यह क्षति अपूर्य है और इस सभा के सभी वर्गों के सदस्य उनके निधन पर उनके परिवार के सदस्यों के साथ शोक मनायेंगे, क्योंकि यह क्षति हमारे देश में वास्तव में एक राष्ट्रीय क्षति है।

सरदार हुक्म सिंह : उपाध्यक्ष महोदय ! श्री मावलंकर की मृत्यु से भारत ने आज एक बहुत ही महान् व्यक्ति खो दिया है। बहुत समय तक संसद् को उनकी रहनुमाई और प्रोत्साहन की आवश्यकता थी और देश को उनके परामर्श और सहायता की आवश्यकता थी। वह सदन की प्रतिष्ठा बनाये रख सकते थे और साथ ही सदस्यों के अधिकारों की रक्षा भी कर सकते थे। उन्होंने ऐसी परम्परायें स्थापित की थीं जो भविष्य में, आने वाले समय में, अनुकरणीय होंगी। यह क्षति बहुत बड़ी है। हम अनुभव करते हैं कि उनकी उपस्थिति के बिना यह सदन बहुत निर्धन हो गया है। यह आघात इतना बड़ा है कि इस समय हम यह नहीं जानते कि किस प्रकार हम अपने दुःख को मिटायें। किन्तु हम हताश हैं। इस समय हम केवल यही प्रार्थना करते हैं कि परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दे।

मैं अपने दल की ओर से अन्य मित्रों द्वारा उनके प्रति प्रकट की गई सहानुभूति के साथ-साथ अपनी सहानुभूति भी प्रकट करता हूं और आपसे तथा प्रधान मंत्री से प्रार्थना करता हूं कि उनक परिवार के सदस्यों को आप हमारी सहानुभूति भिजवा दें।

श्री उ० मु० त्रिवेदी : मुझ से पहले बोलने वाले मित्रों ने अपनी जिन भावनाओं का स्पष्टीकरण किया है, मैं भी जनसंघ दल की ओर से अपनी सहानुभूति प्रकट करने में उनके साथ हूं। देश के एक ऊंचे दर्जे के साहसी व्यक्ति और स्वाधीनता संग्राम के सेनानी के निधन पर मैं अत्यन्त दुखी हूं। मैं यह भी कहूंगा कि सदन के सब सदस्यों के प्रति उनकी स्थिर एवं निष्पक्ष नीति लोक-सभा के इतिहास में एक अमिट छाप छोड़ गई है।

मुझे आशा है कि उनके संतप्त परिवार को आप हमारी दुःखी भावनायें प्रेषित कर देंगे।

डा० लंका सुन्दरम् : उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक एसा सदस्य हूं जिसका सम्बन्ध किसी भी दल से नहीं है। मैं आपको इस बात के लिये धन्यवाद देता हूं कि आपने स्वर्गीय अध्यक्ष के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने का मुझे अवसर दिया।

उनकी मृत्यु पर लोक-सभा, संसद् और सम्पूर्ण देश आज दुःख प्रकट कर रहा है। वह एक महान् पुरुष और एक अच्छे व्यक्ति थे।

आज से ठीक एक महीने पूर्व २७ जनवरी को यह दुर्घटना मेरे नगर विशाखापटनम् में हुई होती जब अध्यक्ष महोदय को वहां भंयकर दिल का दौरा पड़ा था। उन्होंने अपने सभी सार्वजनिक कार्यक्रमों को स्थगित कर दिया और वह वहां तीन दिन तक रुके। उस समय मुझे यह अवसर प्राप्त हुआ कि मैं उनको रेलगाड़ी में बिठा सकूं। मैं समझता हूं कि उनकी यह अन्तिम यात्रा थी। उनमें इतना आत्म विश्वास था और अपने कर्त्तव्य के प्रति इतनी भावना थी और उन संस्थाओं के प्रति, जिनसे उनका लगाव था, उन्हें इतना मोह था कि उन्होंने मुझे इस बात का अधिकार दिया कि मैं समाचारपत्रों और बम्बई में उनके दोस्तों को इस बात की तार द्वारा सूचना दूं कि उनको दिल का दौरा नहीं पड़ा है और वह स्वस्थ हैं तथा वह अहमदाबाद वापिस जा रहे हैं। यह बात विशाखापटनम् में गत मास ३० तारीख को हुई थी।

सभा को मैं एक बात और बता देना चाहूंगा जिसके बारे में किसी को कुछ भी पता नहीं है। तीन दिन की चिन्ताजनक स्थिति के पश्चात् जब मैंने उनको रेलगाड़ी में बिठाया तो गांधी स्मारक निधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अध्यक्ष के नाते उनको इस बात का पता चला कि यहां एक हरिजनों के लिये मन्दिर है—सम्भवतः भारत में यह अपनी किस्म का एक ही मन्दिर था और इसका प्रतिष्ठापन गांधी जी ने १९३३ में किया था। वह उस मन्दिर को देखने के लिये गये और मेरी इच्छा के विरुद्ध भी वह कार से नीचे उतर पड़े और उन्होंने मन्दिर को देखा तथा उस मन्दिर की उचित देखभाल के लिये उपयुक्त व्यवस्था की। तत्पश्चात् उन्होंने गाड़ी पकड़ी।

उनमें जनसमाज की सेवा के लिये अटूट भावना थी जो बहुत ही आश्चर्यजनक है। मैं उनको कई वर्षों से संसद् के बाहर तथा संसद् में भी अच्छी तरह से जानता था। मैं कहूंगा कि वह एक महान् और अच्छे व्यक्ति थे और एक ऊंचे दर्जे के देशभक्त थे। उनके परिवार को भेजे जाने वाले शोक संदेशों में अपना संदेश भी सम्मिलित करता हूं।

श्री सोमानी : संसद् के स्वतन्त्र सदस्यों के वर्ग की ओर से मैं भी अपनी श्रद्धांजलि अध्यक्ष के प्रति प्रकट करता हूं।

श्रीमती उमा नेहरू : उपाध्यक्ष महोदय, अपनी ओर से तथा लोक-सभा की महिला सदस्याओं की ओर से श्री ग० वा० मावलंकर के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं। श्रद्धांजलियों के रूप में उनके प्रति जो कुछ कहा गया है वह कभी भी काफी नहीं हो सकता। उनकी मृत्यु के कारण आज सभा में एक प्रकार की रिक्तता आ गई है। मैं तथा इस सभा की महिला सदस्यायें प्रायः उनके पास जाया करती थीं और वह हमारी रहनुमाई करते थे तथा हमें इस बात का परामर्श देते थे कि हमको किन विषयों पर बोलना चाहिये। वह इस लोक-सभा के निर्माता थे। कल तक हम यह विश्वास करते थे कि परमात्मा की दया से वह कुछ दिन और जीवित रहेंगे और आज के समाचारपत्रों ने इस बात की पुष्टि भी की थी। किन्तु आज प्रातः ९ बजे उनकी मृत्यु के समाचार ने हम लोगों को शोक सागर में डाल दिया है। श्री ग० वा० मावलंकर इस लोक-सभा के केवल अध्यक्ष ही नहीं थे, अपितु वह हम सबके लिये शक्ति-स्तम्भ थे। जब कभी भी हम उनसे मिलीं, उन्होंने लोक-सभा के नियम और प्रक्रिया के सम्बन्ध में शिक्षा ही दी। वह एक बहुत बड़े समाज सुधारक थे। वह कस्तूरबा-ट्रस्ट के कार्य की देखभाल तथा उसकी देखरेख करते थे और जब कभी भी हम इस सम्बन्ध में उनके पास गईं तो उन्होंने महिलाओं की उन्नति के लिये किये जाने वाले उपायों के सम्बन्ध में हमें परामर्श दिया। उनका निधन देश के लिये और विशेषतः हमारे तथा लोक-सभा की महिला सदस्याओं के लिये एक बहुत बड़ी क्षति है। मैं आपसे प्रार्थना करती हूं कि उनके निधन पर हमारी शोक संतप्त भावनायें, श्रीमती मावलंकर, उनके पुत्रों एवं पुत्रियों तक भिजवा दें।

मैं समझती हूं कि उनकी मृत्यु से जो कमी हो गई है उसकी पूर्ति होना सम्भव नहीं। मेरे विचार से भारत में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो उनके स्थान की पूर्ति कर सके।

उपाध्यक्ष महोदय : इस सभा के माननीय नेता, अन्य सदस्यों तथा इस सभा के विभिन्न वर्गों के नेताओं ने श्री मावलंकर के प्रति जो श्रद्धांजलियां अर्पित की हैं, मैं भी उसमें पूर्णतः उनके साथ हूं।

श्री मावलंकर की मृत्यु एक बहुत बड़ी क्षति है और एक प्रकार से ऐसी रिक्तता आ गई है, जिसकी पूर्ति होना सम्भव नहीं। हम सभी यह जानते हैं कि पिछले दो अथवा तीन वर्षों से उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यद्यपि वह कभी-कभी संसद् नहीं आ पाते थे और दिल्ली अथवा अहमदाबाद में चारपाई पर ही पड़े रहते थे, फिर भी उनके कारण हममें इतना साहस था और विशेष रूप से मैं यह अनुभव करता था कि सदैव ही वह मेरी रहनुमाई करते रहे हैं। मैंने उनसे बहुत सी बातें सीखीं और इस सभा में मैं यदि कुछ करने लायक बना तो यह केवल उनके परामर्श के कारण ही था, जो समय-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय पर मैं उनसे पाता रहा। मैं अब भी आशा करता था कि वह जल्दी ठीक हो जायेंगे और परमात्मा कुछ अधिक वर्षों तक काम करने के लिये उन्हें शक्ति प्रदान करेगा। चाहे वह संसद् में न आ सकें, किन्तु हममें से कुछ व्यक्ति उनसे मिल सकते थे, और संसद् एवं देश को उनका परामर्श मिल सकता था। किन्तु भगवान को कुछ और ही मंजूर था।

उन्होंने व्यक्तिगत रूप से राजनीतिक रूप में, एक महान् नेता के रूप में तथा देशभक्त के रूप में बहुत ही शानदार जीवन बिताया। तीन अथवा चार बार अथवा जब कभी भी आवश्यकता हुई, स्वतन्त्रता संग्राम में वह जेलखाने गये। वह बहुत बड़े समाज सुधारक थे। वह एक प्रकार से नये अहमदाबाद के बनाने वाले थे। वह सरदार पटेल के दाहिने हाथ थे।

गुजरात ने बड़े-बड़े महान् व्यक्ति उत्पन्न किये हैं। राष्ट्रपिता गुजरात में पैदा हुए थे। सरदार पटेल गुजरात में पैदा हुए थे। श्री विट्ठल भाई पटेल भी वहीं के थे, जिन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी और जो पुरानी विधान सभा के अध्यक्ष थे और जिन्होंने उस समय पुराने शासकों से लड़ाई लड़ी, जब हम प्रशासन के अधिकारी नहीं थे। किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् श्री मावलंकर का नाम आता है। यह ठीक है कि उनको संसद् का पिता कहा गया है। लोकतंत्र के विकास के लिये उन्होंने बहुत काम किया और उन्होंने लोक-सभा में लोकतन्त्रीय परम्पराओं की नीव रखने के लिये बहुत ठोस काम किया है। उन्होंने जिन परम्पराओं की स्थापना की है, लोक-सभा उनको कभी नहीं भूल सकती। अभी हाल में वह राष्ट्रमंडलीय संसदीय संस्था की बैठक, जमाइका, में भाग लेने वाले थे। वह तथा मैं दोनों ही भारत की ओर से उसके लिये प्रतिनिधि थे। किन्तु वह आ नहीं सके फिर भी उनकी अनुपस्थिति में सभी सदस्यों ने उन्हें उस परिषद् का सर्वसम्मति से सभापति चुना—उनकी निगाह में इनके अतिरिक्त कोई दूसरा व्यक्ति नहीं आया। वह सब इस बात के इच्छुक थे कि राष्ट्रमंडलीय संसदीय संस्था की बैठक यहां होनी चाहिये। इस पर उन्होंने सुझाव दिया कि वह लोग यहां आ सकते हैं और दिसम्बर १९५७ में बैठक कर सकते हैं। उनके कारण तथा प्रधानमंत्री के कारण ही विभिन्न राष्ट्रमंडलीय देश यहां सम्मेलन करने के लिये ज़ोर दे रहे थे। उनका सम्मान केवल भारत में ही नहीं, इस संसद् में ही नहीं होता था अपितु विशेष रूप से राष्ट्रमंडलीय देशों में जहां भी वे जाते थे, उनका सम्मान होता था। वह भारतीय संसदीय प्रतिनिधि मंडल के नेता के रूप में कई बार बाहर गये। पिछली बार यह सम्मेलन ओटावा में हुआ था। उन्होंने राष्ट्रमंडलीय अध्यक्ष सम्मेलन में भी भाग लिया था। उन्होंने कई बार पीठासीन पदाधिकारियों का सम्मेलन भी बुलाया था। वह हर वर्ष विभिन्न स्थानों पर गये और विभिन्न राज्यों की राजधानियों को देखा। वह उन स्थानों पर अध्यक्षों तथा उपाध्यक्षों के साथ गये। उनके परामर्श बहुत ही मूल्यवान् होते थे। वह एक महान् पथनिर्देशक थे और आज हमने उनको खो दिया है। हालांकि संसद् का काम तो चलता रहेगा और दूसरी संस्थायें भी चलती रहेंगी, किन्तु उन्होंने जो प्रकाश दिखाया था, उसकी कमी ज़रूर बनी रहेगी और उनकी मृत्यु से जो स्थान रिक्त हुआ है वह बहुत समय तक पूरा नहीं हो सकेगा।

मैं लोक-सभा की भावनाओं को और दुःखपूर्ण विचारों को उनके परिवार के सदस्यों तक निश्चय ही भेज दूंगा। उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये मैं सदस्यों से प्रार्थना करता हूं कि वह अपने स्थानों पर एक मिनट के लिये खड़े हो जायें।

राज्य-सभा

सदन के नेता (श्री गोविन्द बल्लभ पन्त) : माननीय सदस्यों ने श्री मावलंकर के निधन का अत्यन्त दुःखपूर्ण समाचार सुन लिया होगा। वह बहुत दिनों से दिल के दौरे के मरीज़ थे। कुछ दिन पूर्व उन पर दिल का दौरा फिर पड़ा। आज सुबह के समाचारपत्रों में प्रकाशित समाचार इस बात की पुष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते थे कि उनकी स्थिति सुधर रही है। ऐसा प्रतीत होता था कि वह इस दुर्घटना से बच जायेंगे और हमने सोचा कि यह बड़ी विपत्ति टल गई और अब वह सुधर रहे हैं। इसलिये भी हम उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर भौंचक्के से रह गये, क्योंकि हम तो यह समझे बैठे थे कि उनकी स्थिति में जल्दी सुधार हो जायेगा।

ऐसी स्थिति में जब हम सभी दुःखी हैं मावलंकर जी के बारे में कुछ कहना बहुत कठिन है। वास्तव में वह एक महान व्यक्ति थे, एक पवित्र आत्मा थे, जनता के नेता थे, जिन्होंने बिना किसी स्वार्थ के जनता की सेवा की और अपने स्वास्थ्य का ध्यान न रखकर पद-दलित व्यक्तियों की आवश्यकताओं और उनकी कठिनाइयों का ध्यान रखा और उनमें सुधार किया। उन्होंने कभी अपनी परवाह नहीं की। वह सही मानी में गांधी जी के शिष्य थे। उनकी मृत्यु से एक बहुत ही बहादुर और देश का बहुत बड़ा आदमी खो गया है, जिसकी पूर्ति होना कठिन है। यह हमारे लिये एक बहुत बड़ी क्षति है। वह बहुत ही सुसंस्कृत व्यक्ति थे। उन्होंने ऐसे व्यक्तियों की सेवा की, जिनके बारे में साधारण तौर पर प्रायः लोग कुछ ध्यान नहीं दिया करते। वह सच्चे हीरों के समान थे और उनमें पवित्रता की झलक दिखाई पड़ती थी। वह जहां कहीं भी गये और जिस स्थान पर भी आये वह वहीं उच्च दिखाई पड़े। अध्यक्ष के रूप में भी वह पूर्ण थे। ऐसे व्यक्ति के लिये कुछ कहना और उपयुक्त शब्दों में अपनी भावना प्रकट करना एवं ऐसी महान् मस्तिष्क और हृदय वाले व्यक्ति की योग्यता के बारे में कुछ कहना, बहुत ही कठिन है। हममें से व्यक्तियों के लिये भी यह एक व्यक्तिगत हानि है। हम उनका सम्मान करते थे। हम उन्हें प्यार करते थे और जब कभी भी हमारे सामने कोई कठिनाई आयी तो हम उनकी रहनुमाई की आकांक्षा करते थे। हमारे इतिहास में उनका उदाहरण सदैव विद्यमान रहेगा और उन व्यक्तियों को सदैव ही एक प्रेरणा देगा, जो अपने दिशा-निर्देश के लिये और क्रियाशील निःस्वार्थ सेवा के सच्चे सिद्धान्तों को सीखने के लिये महान् व्यक्यिों के आदर्श पर पूरे भरोसे के साथ चलना चाहते हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके पुत्रों तथा उनके परिवार के अन्य सदस्यों को इस सभा की सहानुभूति भेजें और यह भी प्रार्थना करता हूं कि उस दिवंगत आत्मा के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये इस सभा को स्थगित कर दें।

सभापति महोदय : सभा के नेता श्री गोविन्द वल्लभ पन्त ने जिन भावनाओं को व्यक्त किया है, हम सभी उसमें उनसे सहमत हैं। अभी उस दिन श्री मावलंकर के संसदीय परम्पराओं और प्रक्रियाओं सम्बन्धी ज्ञान का मैं उल्लेख कर रहा था। उस समय मुझे इस बात का आभास भी नहीं था कि हमें इतनी जल्दी उनकी क्षति पर रोना होगा। वह बम्बई विधान-सभा के अध्यक्ष थे, अस्थायी संसद् के अध्यक्ष थे और लोक-सभा के प्रथम अध्यक्ष थे। उन्होंने स्वस्थ संसदीय परम्पराओं को बनाने का प्रयत्न किया था और एक पीठासीन पदाधिकारी का कार्य कोई आसान काम नहीं होता और विशेषतः उस समय जब कि निश्चित विचार वाले बहुत से वर्ग अथवा बहुत से सदस्य हों। उन्होंने एक संतुलन बनाये रखने के लिये बहुत कुछ कार्य किया और अपने पीछे एक महान परम्परा छोड़ गये हैं। मैं उनको बहुत वर्षों से जानता था और दूसरे क्षेत्रों में उनकी कार्यवाहियों ने मुझे बहुत कुछ हद तक प्रेरित किया है। वह अहमदाबाद नगरपालिका के अध्यक्ष थे। गुजरात विश्वविद्यालय से उनका निकट का सम्बन्ध था और गांधी स्मारक ट्रस्ट तथा कस्तूरबा राष्ट्रीय ट्रस्ट के वह अध्यक्ष थे। इन विभिन्न क्षेत्रों में उनकी एक रुचि यह भी थी कि दुःखी व्यक्तियों की सहायता की जाये और इसके लिये उन्होंने बड़ा कार्य किया। हमने एक ख्याति प्राप्त जन सेवक को तथा हमारी संसद् के—लोक-सभा के—महान् अध्यक्ष को खो दिया है। श्री मावलंकर के निधन पर हम सबको जो दुःख हुआ है उसे निश्चय ही मैं प्रेषित कर दूंगा। स्थगित होने से पूर्व हम उस दिवंगत आत्मा के प्रति दुःख प्रकट करने के लिये २ मिनट के लिये खड़े होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ३ :

स्वर्गीय श्री ग० वा० मावलंकर*

उपाध्यक्ष महोदय तथा मित्रो,

आज आपके समक्ष कुछ कहने की शक्ति मुझ में नहीं है। एक प्रकार से मैं अपने आपको बिल्कुल अकेला सा अनुभव करता हूं। श्री मावलंकर की मृत्यु वास्तविक है और सदैव ही उनका अभाव अखरेगा। मेरे मस्तिष्क में बहुत सी घटनायें घूम रही हैं। एक विशेष बात जो मेरे दिमाग में है वह यह है कि जब मैं सदन में अपनी कुर्सी पर बैठा था मैं यह कल्पना नहीं कर पा रहा था कि श्री मावलंकर अब नहीं रहे। यह बाहरी वातावरण, और जो जानकारी मिली एवं एतदर्थ जो मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाएं हुईं—उन्होंने एक प्रकार से मेरे मस्तिष्क में घर बना लिया। साथ ही यह भावना भी जागृत हुई कि यह सब कुछ संभवतः अवास्तविक है और श्री मावलंकर अभी तक जीवित हैं। इस शोकपूर्ण अनुभव एवं उनकी उपस्थिति की भावना का स्पष्टीकरण इस उद्देश्य से करता हूं कि ताकि हम यह देख सकें कि यद्यपि उनकी मृत्यु हो चुकी है तथापि फिर भी वह कुछ ऐसी चीज़ छोड़ गये हैं जो अमर है, जिसका हमारे लिये बहुत महत्व है।

श्री मावलंकर के सम्पर्क में मैं उस समय आया जब वह पहली बार केन्द्रीय विधान-सभा के अध्यक्ष चुने गये। यह बात जनवरी, १९४६ की है जिसे आज १० वर्ष से अधिक हो गये। उस समय उनको अध्यक्ष निर्वाचित करने के लिये बड़ी होड़ चल रही थी। मैंने इसकी चर्चा किसी दूसरे स्थान पर की है और अब उसका यहां उल्लेख करना उपयुक्त नहीं है। किंतु उसका उल्लेख मैंने इस दृष्टि से किया है कि जब से वे संसद् के अध्यक्ष बने उन्हें कठिनाइयों एवं मतभेदों का सामना करना पड़ा तथा काफ़ी परिश्रम भी करना पड़ा, जिसमें उनका व्यक्तित्व और अधिक चमकता गया। उसी वर्ष वह अध्यक्ष बने, राष्ट्रीय सरकार ने २ सितम्बर, १९४६ को कार्य भार संभाला और १५ अगस्त, १९४७ तक जब कि केन्द्रीय विधान-सभा समाप्त हुई, तब तक संकट पर संकट आते रहे। उसी समय उनका पद भी समाप्त हो गया और १७ नवम्बर, १९४७ को संविधान सभा (विधायिनी) में व अध्यक्ष चुने गये। इस प्रकार १५ अगस्त से १७ नवम्बर, १९४७ तक अध्यक्ष पद पर एक प्रकार से कोई भी नहीं था। मैंने इस घटना का उल्लेख इसलिये किया था कि आज प्रातः काल प्रधान मंत्री ने ऐसी बात कही थी जिसका कहा जाना महत्वपूर्ण है, क्योंकि जो बात उन्होंने आज कही है वही उन्होंने उस टिप्पण में भी लिखी थी, जो उन्होंने भूतपूर्व विधान-सभा विभाग के प्रशासन के बारे में लिखा था कि विधान-सभा विभाग का उस समय कोई मुखिया नहीं था, वह हैडलेस (शीर्षहीन) हो गया था। उस समय इस भावना का व्यक्त करना कुछ महत्व रखता था, क्योंकि हम सभी यह जानते थे कि श्री मावलंकर अध्यक्ष के रूप में फिर आ रहे हैं, और उनकी अनुपस्थिति केवल एक कानूनी एवं संविधानिक मामला है। किन्तु आज जब प्रधान मंत्री ने वही शब्द हैडलेस (शीर्षहीन) प्रयुक्त किया, तो इसका दूसरा ही महत्व हो जाता है और मेरे मस्तिष्क में एक ऐसी भावना आती है, जिसका व्यक्त करना बड़ा कठिन है।

***श्री ग० वा० मावलंकर के निधन पर संसद् भवन में २७ फरवरी, १९५६ को जो शोक सभा हुई थी, उसमें लोक-सभा के सचिव श्री महेश्वर नाथ कौल द्वारा दिये गये भाषण का अविकल पाठ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री मावलंकर मेरे लिये केवल अध्यक्ष ही नहीं अपितु पितृतुल्य थे। उनके साथ अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों को ही में अधिक महत्व देता हूं, जो मेरे और उनके सम्बन्ध के महत्वपूर्ण भाग थे और जो बढ़ते ही गये। हम केवल कार्यालय सम्बन्धी बातों पर ही चर्चा नहीं करते थे, अपितु हमेशा ही और जब कभी मैं उनके साथ रहा जीवन की सामान्य बातों के सम्बन्ध में उन्होंने शिक्षा दी कि किस प्रकार हमें कार्य करना चाहिये, कैसा व्यवहार रखना चाहिये और हमसे प्रत्येक को किस प्रकार अपना जीवन गौरवान्वित करना चाहिये और देश की भलाई के लिये कैसा कार्य करना चाहिये। मैं नहीं बता सकता कि उनके साथ के ये १० वर्ष मेरे लिये कितने मूल्यवान् थे। उनके सम्पर्क में आना उत्साहवर्द्धक एवं प्रभाव डालने वाला था और उनके सम्पर्क में रहकर सदैव ही मैंने यह अनुभव किया कि मैं बहादुर, निडर, निर्भीक एवं स्वतन्त्र व्यक्ति के सम्पर्क में हूं और ऐसी स्थिति में हूं कि चाहे कैसा ही आपात क्यों न आये, कैसी ही परिस्थितियां क्यों न उत्पन्न हो, मैं उन सबका सामना कर सकता हूं। उनके साथ रहकर सामना कर सकता हूं। उनके साथ रहकर मैं यह अनुभव करता था कि मैं बढ़ सकता हूं, आगे जा सकता हूं और आने वाले किसी भी प्रकार के झगड़ों एवं कठिनाइयों का सामाना कर सकता हूं। जब उनके साथ कार्य करता था तो कभी कोई हीन भावना मेरे मस्तिष्क में नहीं आई।

एक बड़ी विशेषता, जो मैंने उनमें पाई, वह यह थी कि जब कभी वह तर्क सुनते थे, तो बड़े ध्यान से सुनते थे और सदैव उनको समझते थे, भले ही मैं क्या कह रहा हूं इसके होते हुए भी उन्होंने अपना विचार बना लिया हो। अधिकांशतः तो वे परामर्श स्वीकार कर लेते थे बशर्ते उसके विरोध में कोई बात न हो और जब एक बार वह किसी परामर्श को स्वीकार कर लेते थे तो यह बात उनकी हो जाती थी और सदैव वह उसका पक्ष लेते थे और उसके लिये वह इस प्रकार ज़ोरदार समर्थन करते थे, मानों यह उनका अपना मत हो और स्वयं उन्होंने यह धारणा बनाई हो। एक विभागाध्यक्ष के लिये यह बहुत बड़ी बात है यदि वह इस बात का अनुभव करता है कि उसके वरिष्ठ पदाधिकारी को उसने जो जानकारी अथवा परामर्श दिया है, उसके लिये वह उसे दोष नहीं देता। आखिर सचिव के नाते उसे अध्यक्ष को परामर्श देना ही पड़ता है और एक ओर जब परामर्श दे दिया जाता है और अध्यक्ष उसे स्वीकार कर लेता है तो यह अनुभव करना चाहिये कि किसी भी समय वह इसके लिये उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। इसका अभिप्राय यह था कि मेरे लिये यह बड़े दायित्व की बात थी एवं प्रशासन के लिये प्रेरणाजनक थी।

श्री मावलंकर को आप एक बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र में अर्थात् संसदीय क्षेत्र में कार्य करने के कारण जानते हैं। किन्तु जैसा कि प्रधानमंत्री ने आज प्रातः अपने भाषण में उल्लेख किया है कि सामाजिक क्षेत्र में भी उन्होंने बहुत बड़ा कार्य किया है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि दो महत्वपूर्ण न्यासों—गांधी-स्मारक निधि और कस्तूरबा-स्मारक निधि—के अलावा अहमदाबाद तथा उसके आसपास भी ५२ संस्थाओं का नियंत्रण करते थे और न्यासों के प्रशासन करने में उनका काफी समय लगता था।

आप में से जिन्होंने उनकी पुस्तक "माई लाइफ़ एट दी बार" पढ़ी है वे जानते हैं, कि उनका व्यक्तित्व और उनका संघर्ष उस ग्रंथ में किस प्रकार सजीव हो रहा है। जिन्होंने यह पुस्तक पढ़ी नहीं है, वे उसे पढ़ें, क्योंकि यह उसी प्रकार एवं उसी आधार पर लिखी गई है जिस पर गांधी जी की आत्मकथा है, और इसमें यह दिखाया गया है कि एक मनुष्य किस प्रकार उन उलझनों एवं समस्याओं का सामना करता है जो प्रायः एक नवयुवक वकील के समक्ष आया करती है और अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनों में उन्होंने किस प्रकार के नैतिक मूल्य निर्धारित कर रखे थे। उन्होंने जो कुछ किया अथवा उनके जीवन में जो कुछ आया, उन्होंने उसकी माप नैतिक स्तर के रूप में की; और जहां उन्हें असफलता मिली वहां भी उन्होंने उसे उसी रूप में लिया। उनमें कुछ विशेष बात थी, और वह थी मूल्यांकन करने की प्रतिभा, जो हम सब में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है किन्तु उनमें यह प्रतिभा बड़े प्रभावकारी रूप में थी; और यह प्रतिभा एक प्रकार से उनसे अलग होते होते भी उन्हीं का अंग थी; और इससे वे अपने अभावों को मापते थे और जब उन्हें इन कमियों का ज्ञान हो जाता तो इन कमियों को दूर करके वे आगे बढ़ते थे। उनमें यह उच्चतम विशेषता थी जो उनमें बचपन से ही पाई गई थी और जिसने उन्हें ऊंचा उठाने में तथा जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने में सहायता की।

एक दूसरा क्षेत्र और भी था, जहां उन्होंने बड़ा अच्छा कार्य किया और वह था अहमदाबाद नगर-पालिका के सभापति के रूप में। इसका उल्लेख श्री अशोक मेहता ने आज प्रातः काल किया है उन्होंने श्री मावलंकर को वर्तमान अहमदाबाद का निर्माता कहा है। मैं समझता हूं यह एक उपयुक्त श्रद्धांजलि है।

हममें से बहुत से व्यक्ति श्री मावलंकर को पिछले १० वर्षों से अध्यक्ष के रूप में जानते हैं। किन्तु मैं तो कहूंगा कि वस्तुतः वह पिछले २० वर्षों से अध्यक्ष थे क्योंकि १९३७ में जब कांग्रेस ने पहली बार निश्चय किया कि उसे राजनैतिक उत्तरदायित्व संभालना चाहिये, तो वह बम्बई विधान-सभा के अध्यक्ष चुने गये। और जबसे वह उस पद पर पहुंचे तब से हमेशा अध्यक्ष ही रहे। वास्तव में जहां तक उनके व्यक्तित्व का मामला है उन्होंने हाउस आफ कामन्स की प्रथा का पालन किया कि २० वर्ष पहले जब वे अध्यक्ष चुने गये, तो अपने जीवनकाल में उन्होंने कोई और दूसरा पद ग्रहण नहीं किया। उन्होंने अध्यक्ष पद को और गौरवान्वित किया और सम्पूर्ण भारत में इसकी प्रतिष्ठा बढ़ाई।

भारत के बाहर के क्षेत्रों में श्री मावलंकर के क्रिया-कलापों का उल्लेख किये बिना, उनको समझना कठिन होगा। यह मेरा सौभाग्य था कि १९४८, १९५० और १९५२ में मैं उनके साथ संसदीय सम्मेलनों में भाग लेने के लिये गया। ये सम्मेलन लंदन, डबलिन और कनाडा में हुए थे। हमारे लिये यह विस्मयपूर्ण गौरव की बात थी, और इसकी पुष्टि श्री एन० सी० चटर्जी ने अपने उस भाषण में की है, जो आज प्रातः उन्होंने लोक-सभा में दिया था, कि अध्यक्ष के रूप में केवल भारत में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण राष्ट्रीमंड-लीय देशों और उत्तर अमेरिका महाद्वीप के संसदीय क्षेत्रों में श्री मावलंकर का बड़ा मान था। मैं यह कह सकता हूं कि हाउस आफ कामन्स के अध्यक्ष तथा अन्य अध्यक्षों ने संसदीय परम्पराओं एवं प्रक्रियाओं एवं संसद् सम्बन्धी अन्य मामलों के बारे में श्री मावलंकर ने जो कार्य किया उसकी बड़ी प्रशंसा की थी। मैं यह कहना चाहूंगा कि उनकी मृत्यु से हमने आज न केवल एक महान् अध्यक्ष ही खोया है, अपितु वर्तमान काल के महानतम अध्यक्षों में से एक अध्यक्ष खो दिया है। और उनकी स्मृति सदैव ही हमारे हृदय पटल पर अंकित रहेगी और दिन-दिन उज्वल होती जायेगी।

ऐसे अवसरों पर जब कभी प्रधान मंत्री ने लोक-सभा में भाषण दिया है जो तो मैंने यह अनुभव किया है कि उन्होंने राष्ट्र तथा संसद् की क्षति की भावना का ही उल्लेख किया है। और जब वह किसी शब्द का प्रयोग करते हैं, तो वह संसद् और जनता की भावना का ही द्योतक होता है। आज जब प्रधान मंत्री ने कहा था कि श्री मावलंकर सदन के पिता थे तो मैं उनकी बात बड़ी ध्यानपूर्वक सुन रहा था। मैंने अपने आपसे कहा कि उन्होंने ठीक ही बात कही है और उन्होंने ऐसा शब्द प्रयुक्त किया है जो सम्पूर्ण देश में प्रतिध्वनित होगी तथा हम सभी के भावों और विचारों में गूंजेता रहेगा।

हमारे लिये एक विशेष अर्थ में वे बहुत ही प्रिय थे। मैं इस सचिवालय का जिसके वह १९४६ में मुखिया बने, उस समय का वर्णन करता हूं; तब इसमें ५० या ६० व्यक्ति ही कार्य करते थे, और आज यह सचिवालय बड़ा विस्तृत हो गया है और यहां के कर्मचारियों की संख्या बढ़ कर दसगुनी हो गई है। ये आंकड़े इस बात को सिद्ध करते हैं कि उन्होंने बड़ा प्रयत्न किया था और संसद् के और बाद म लोक-सभा के इस सचिवालय के निर्माण करने तथा इसका संगठन करने में उन्होंने कितना परिश्रम किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका मस्तिष्क कभी बेकार नहीं रहता था। जब कभी भी मैं उनसे मिलता, वह पूछते थे, "हम क्या-क्या नई बातें कर रहे हैं? संसदीय क्षेत्र में हम और कौन नई बातें सामने ला सकते हैं"। वह सदैव ही नया कार्य करने को तैयार रहते थे। उन्होंने सदैव मेरी बातें सुनीं और कुछ ऐसी बात थी, जिसने सदैव ही मेरे मस्तिष्क पर अपनी छाप छोड़ दी। वह जिस किसी के संपर्क में आये, उसी में उन्होंने अपनी शक्ति फूंक दी। जब भी मैंने उनसे कहता कि क्या वह कार्यालय देखने चलेंगे तो वे तुरंत ही तैयार हो जाते थे। एक सांयकाल अचानक ही उन्होंने मुझे टेलीफोन किया कि वह वितरण शाखा (डिस्ट्रीब्यूशन ब्रांच) देखना चाहते हैं। एक बार मैंने उन्हें बताया कि स्थानाभाव के कारण सचिवालय की कुछ शाखायें यहां से दूसरे स्थानों पर चली गई हैं, इस पर तुरंत ही उन्होंने उत्तर दिया कि वह वहां कार्य करने वाले कर्मचारियों से मिलना चाहते हैं। अस्वस्थ रहते हुए भी वह उन सभी कामों को, जो उन्हें दिये जाते थे, करने के लिये तत्पर रहते थे और जो उनके साथ कार्य करते थे, उनमें विश्वास जागृत करते थे।

मैं अनुभव करता हूं कि उनकी मृत्यु से वह शक्ति जो उनके सम्पर्क से मुझे मिलती थी, अब नहीं मिल सकेगी। इस समय यह एक महान क्षति है किन्तु मैं समझता हूं और मेरा यह विश्वास है कि हम उन विचारों, भावनाओं, एवं अन्य बहुत सी बातों का विकास करेंगे और उन्हें मूर्तरूप देंगे, जिनका उन्होंने सुझाव दिया था तथा समय-समय पर जिनकी नींव डाली थी।

मैं यहां यह भी कहूंगा कि राष्ट्रमंडलीय संसदीय संस्था की उन्होंने जो सेवायें की थीं, उनको मान्यता देने के लिये साधारण परिषद् (जनरल कांसिल) की जमाइका बैठक में, जो अभी हाल में हुई थी और जिसमें उपाध्यक्ष महोदय ने भाग लिया था, उनको सर्वसम्मति से राष्ट्रमंडलीय संसदीय परिषद् का सभापति चुना गया था। उस क्षेत्र में उन्होंने जो महान् कार्य किया था उसके लिये यह उपयुक्त श्रद्धांजलि थी।

उनके प्रयत्नों का ही परिणाम था कि इस निकाय का नाम साम्राज्य संसदीय संस्था से बदल कर राष्ट्रमंडल संसदीय संस्था पड़ा और उन्होंने यह प्रयत्न १९४८ में किया था। १९४७ में जब नया विधान-मंडल बना तो उन्होंने जानबूझ कर यह कदम उठाया और साम्राज्य संसदीय संस्था की, जिसके नाम में वह बिल्कुल भी पंसद नहीं करते थे, शाखा का कार्य यहां बंद कर दिया। १९४८ में जो सम्मेलन लंदन में हुआ था, उसमें उन्होंने भाग लिया, हांलाकि उन दिनों भारत में उस संस्था की कोई शाखा नहीं थी, क्योंकि उस शाखा को उन्होंने समाप्त करा दिया था और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि परिवर्तन-शील समय के साथ यदि इस संस्था के नाम में परिवर्तन नहीं किया गया तो उसकी शाखा भारत में नहीं खुलेगी। जब यह बात मान ली गयी, तो शाखा यहां बना दी गयी।

वह सदैव किसी न किसी सिद्धान्त को लेकर चलते थे। जैसे ही आप उनसे बातचीत करना प्रारम्भ करें, चाहे वह प्रशासन का छोटा मामला हो अथवा बड़ा हो वह इसके पीछे निहित सिद्धान्त को समझ लेते थे। और जब सिद्धान्त उन्होने समझ लिया तो वह कहते थे "मैंने निश्चय कर लिया है और इस बारे में मैं अब स्पष्ट हूं एवं अब और तर्क की आवश्यकता नहीं है"।

इसके अतिरिक्त मैंने उनमें एक बात यह देखी कि चाहे वह इस सचिवालय का मामला हो, किसी विभाग का मामला हो या किसी मंत्रालय का वह अपने दृष्टिकोण पर आरूढ़ रहे थे। आपने अभी हाल में गज़ट में प्रकाशित लोक-सभा सचिवालय के नियम देखे होंगे। न तो यह समय है, न यह अवसर ही है और न मेरे लिये ही यह उचित है कि उन नियमों को अंतिम रूप देने में क्या-क्या बातें करनी पड़ी, उसकी व्याख्या इस समय करूं, किन्तु इतना अवश्य कहना चाहूंगा कि इस सचिवालय की स्वायत्तता का यह घोषणापत्र (चार्टर) है। यदि इस सचिवालय की स्वायत्तता का घोषणापत्र है तो यह श्री मावलंकर की उस नीति के ही कारण है जो उन्होंने महत्वपूर्ण एवं विवादस्पद मामलों के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनायी थी। जब कभी सिद्धान्त की बात उठती, तो वह विस्तृत बातों में नहीं जाते और सिद्धान्त पर दृढ़ता से अड़ जाते, चाहे कैसा ही वाद-विवाद क्यों न हो।

मुझे एक बात और याद आ रही है जिसने मेरे मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। लगभग एक या दो वर्ष पूर्व जब एक दिन मैं उनके कमरे में बैठा था तो, मालूम नहीं कैसे उनके मस्तिष्क में क्या बात आई और अचानक ही मुझसे कहने लगे, "कौल! मालूम नहीं कब यह चोला छूट जाये, इसलिये इस विभाग की सेवा-शर्तों को अंतिम रूप देने के लिये तुरन्त और शीघ्र ही कार्यवाही करो, ताकि जब तक मैं यहां हूं, इसके लिये भरसक प्रयत्न कर सकूं और इस सचिवालय के लिये स्वायत्तता ला सकूं, क्योंकि यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है कि इस सचिवालय में जो-जो लोग कार्य करते हैं वे भय और प्रलोभन से दूर रहकर कार्य कर सकें"। वास्तव में ये दो शब्द मेरे मस्तिष्क में बस गये हैं, क्योंकि १५फरवरी को जब लोक-सभा में अध्यक्ष की बीमारी के सम्बन्ध में पढ़ कर सुनाया गया और उस दिन की कार्यवाही उनको भेजी गई तो १७ फरवरी को उन्होंने एक पत्र अपने पुत्र को लिखाया और इस बात पर ज़ोर दिया कि उनके पुत्र उस पत्र को तुरन्त ही मेरे पास भेज दें। वह पत्र उनके आदेशों के अन्तिम प्रलेख के रूप में मेरे पास रखा है। कुछ बातों का उल्लेख करने के पश्चात् अपना पत्र समाप्त करते हुए उन्होंने लिखा है "तुम संसद् की सेवा उसी श्रद्धा से करते रहना जैसा कि तुमने अब तक किया है और भय और प्रलोभन से दूर रह कर कार्य करना"। ये दो शब्द "भय और प्रलोभन से दूर रहकर" मेरे मस्तिष्क में गूंज रहे हैं मानों ये मेरे लिये उनके अंतिम आदेश हैं। आपको संभवतः मालूम होगा कि श्री शकधर उनसे मिलने के लिये उस २० तारीख को गये थे। उन्होंने मुझे बताया कि जहां तक मेरा विचार है उनके चेहरे से ऐसा प्रकट नहीं होता जैसा कि कभी-कभी गंभीर बीमारी वाले तथा जल्दी मरने वाले व्यक्ति के चेहरे से प्रकट होता है। उनका चेहरा सदैव की भांति स्वस्थ एवं ओजस्वी था। उनका दिल बैठ रहा था। मस्तिष्क की ओजस्विता विद्यमान थी। उन्होंने श्री शकधर से कहा कि "जाओ और कौल से कहना कि दो महीने के भीतर मैं वापस आऊंगा, डाक्टर चाहे कुछ भी कहे"। मुझे अब भी याद है कि यह उनकी अजेय आत्मशक्ति का ही बल था कि तीन वर्ष पूर्व की गंभीर बीमारी के पश्चात् भी वह अब तक कार्य करते रहे और यही कारण था कि उन्होंने अपना सम्पूर्ण समय जन-सेवा एवं संसद् की सेवा में लगा दिया।

मुझे उनकी बीमारी की सूचना पहली बार ३० जनवरी को मिली जब हम महात्मा गांधी को श्रद्धांजलियां अर्पित करने के लिये राजघाट गये थे और जिस समारोह का आयोजन राष्ट्रपति ने किया था। उस समय डा० राधाकृष्णन ने, हमारे माननीय उपराष्ट्रपति, मुझे बताया कि उन्होंने समाचार पत्रों में पढ़ा है कि श्री मावलंकर विशाखापटनम् में बीमार हो गये हैं। हमने तुरन्त ही टेलीफ़ोन से बात-चीत की और यह मालूम कर लिया कि उनकी यह बीमारी दिल के दौरे की नहीं है। यात्रा के फलस्वरूप ही वह काफ़ी थक गये थे। हृद्गति के चित्रों से पता चला कि दिल की बीमारी के कोई आसार नहीं हैं न विशाखापटनम् में थे, न बम्बई में थे और न अहमदाबाद के रास्ते में। इस दौरान में बहुत सी बातों के बारे में मुझे उनके व्यक्तिगत पत्र मिलते रहते थे, जिनमें बहुत से मामलों के बारे में समय-समय पर वे निर्देश देते रहते। अतः मैं आशा करता था कि लगभग एक पखवाड़े पर आराम करने के पश्चात् वह ज़ल्दी ही ठीक हो जायेंगे।

अचानक ही ९ फरवरी को मुझे यह सूचना मिली कि उन्हें दिल का हल्का सा दौरा पड़ गया है। इससे हमें बड़ी चिंता हुई, किन्तु शीघ्र ही उनकी स्थिति सुधरने लगी। १८ फरवरी को उनको दिल का दूसरा दौरा पड़ा; और मैं स्वीकार करता हूं कि मुझे उस दिन कुछ ऐसा आभास हुआ कि उनकी मृत्यु समीप है, और यही कारण था कि मैंने श्री शकधर से वहां जाने के लिये कहा ताकि वह व्यक्तिगत रूप से उनको देखकर मुझे सूचना दें। जो सूचना मिली उसमें इस बात की पुष्टि ही की गई थी और उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्र ने भी इस बात का आश्वासन दिलाया कि यदि उनमें शक्ति आ गई तो सब कुछ ठीक हो जायेगा। इन दिनों संसद् तथा सम्पूर्ण देश में सूचना मिल रही थी कि वह सुधर रहे हैं। किन्तु अचानक ही आज प्रातः ७.५५ पर भगवान ने उन्हें हमसे ले लिया। उनका अन्त अचानक ही और बड़ी शांति से हुआ और हमने यह सुना कि अब वह नहीं रहे।

मुझे यह सुन कर बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि मेरे लिये तो वह केवल कार्यालय सम्बन्धी मामलों में ही नहीं, अपितु व्यक्तिगत मामलों में भी पितृतुल्य थे। आज हम सब उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये और एक ऐसे व्यक्ति की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिये एकत्रित हुए हैं, जिन्होंने पिछले समय में हमारा पथ-प्रदर्शन किया और संसद् की एवं इस सचिवालय के कार्यों की जिसका हम आज यह रूप देख रहे हैं नींव डाली। परमात्मा उनकी आत्मा को शांति दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ४ :

दादासाहब मावलंकर

एस० एल० शकधर, संयुक्त सचिव, लोक-सभा सचिवालय

सन् १९५२ में कनाडा में होने वाले राष्ट्रमंडलीय संसदीय सम्मेलन में भाग लेने के लिये स्वर्गीय दादासाहब मावलंकर के नेतृत्व में जाने वाले भारतीय संसदीय प्रतिनिधि मंडल के साथ मैं भी गया था। वहां से हम में से कुछ लोग अध्ययन सम्बन्धी भ्रमण के लिये संयुक्त राज्य अमरीका गये। एक रोज वाशिंगटन में हमारे भारत राजदूत के घर से भोजनोपरांत लौटने में कारों के बारे में कुछ कठिनाई हुई। कारों की संख्या कुछ कम थी और उनमें सब व्यक्ति नहीं आ सकते थे। किन्तु फिर भी किसी न किसी प्रकार मेरे अतिरिक्त और सभी लोग बैठ गये। जब दादासाहब ने यह देखा तो कहने लगे "अन्दर आओ और यहां मेरे पास बैठो"। मैं कुछ झिझका, क्योंकि पिछली सीट पर जहां वह तथा श्रीमती मावलंकर बैठे थे, किसी तीसरे व्यक्ति के लिये और स्थान नहीं था और आगे वाली सीट पहले से ही भरी थी। उन्हें मेरी झिझक का अनुभव हुआ और कहने लगे "संकोच न करो, तुम मेरे ही परिवार के सदस्य हो, मैं तुम्हें अपना पुत्र कह सकता हूं पर हां, यह आशंका है कि कहीं मेरी पत्नी एवं पुत्रों को आपत्ति न हो कि कहीं तुम मेरी सम्पत्ति में भागीदार बन जाओ"। मैंने तुरंत उत्तर दिया, "मैं आपके धन एवं सम्पत्ति में कोई अधिकार नहीं चाहता; मुझे तो आपका पितृतुल्य स्नेह चाहिये"। इस पर सभी लोग हंसने लगे और मुझे दादासाहब और श्रीमती मावलंकर के बीच बैठने को स्थान मिला तत्पश्चात् हमारी मोटर रवाना हुई।

मैंने इस घटना को अपने दिल में संजोकर रख छोड़ा है और जब जब इसकी याद आई है मैंने आनन्द का अनुभव किया है। मैं यह नहीं बता सकता कि इस घटना ने मेरे व्यवहार एवं चरित्र पर एवं समस्याओं को निपटाने के तरीके पर कितना प्रभाव डाला है। उन्होंने ये शब्द केवल कहने मात्र के लिये ही नहीं कहे थे, अपितु मैं यह कह सकता हूं कि दादासाहब के साथ ६ वर्ष के सम्पर्क में एक भी अवसर ऐसा नहीं आया जब उन्होंने मेरे साथ पिता जैसे बर्ताव के अतिरिक्त और किसी और प्रकार का बर्ताव किया हो। एक वरिष्ठ एवं अधीनस्थ पदाधिकारी के सम्पर्क का यह कितन उत्कृष्ट उदाहरण है।

दादासाहब के बारे में एक मानव, अधिवक्ता संसद् विज्ञ, राजनीतिज्ञ एवं अध्यक्ष के रूप में बहुत कुछ कहा गया है एवं लिखा गया है। किन्तु एक प्रशासक के रूप में उन्हें बहुत कम लोग जानते हैं। मैं नहीं कह सकता कि यदि वह कार्यपालिका पदाधिकारी के पद पर होते, तो न जाने उन्होंने कितनी उन्नति की होती। वह मुख्यतः समझौता-प्रिय थे, किन्तु साथ ही अपने सिद्धांतों पर दृढ़ रहते थे। सिद्धांत व अ-सिद्धांत में भेद करना जानते थे और जब वे एक बार निश्चय कर लेते थे, तो उन्हें अपने मत से डिगाना कठिन था। स्वभावतः ही वह यह निश्चय कर लेते थे कि उन्हें किसी मामले विशेष में क्या करना चाहिये और उनका निर्णय प्रायः ठीक ही होता था। एक दिन उन्होंने किसी महत्वपूर्ण विषय पर प्रधान मंत्री को पत्र लिखा और भेजने से पूर्व सदैव की भांति सचिव श्री कौल को दिखाया। हमने इस पर विचार किया और यह अनुभव किया कि या तो उसे भेजा न जाये अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ स्थान विशेषों पर संशोधन कर दिये जायें क्योंकि प्रचलित दृष्टिकोण की अपेक्षा उनका दृष्टिकोण विपरीत था। उनके साथ हमने तर्क किया। उन्होंने ध्यानपूर्वक हमारी बातें सुनीं। और कहा कि उन्होंने निश्चय कर लिया है कि यह पत्र प्रधान मंत्री को इसी रूप में भेजा जाये। हमने उनकी आज्ञा का पालन किया। देखिये ! तुरंत ही प्रधान मंत्री का उत्तर आया कि दादासाहब ने जो कार्यवाही करने का सुझाव दिया है उसका वे केवल समर्थन ही नहीं करते, अपितु उससे पूर्णतः सहमत हैं।

एक प्रशासक के नाते दादासाहब यह जानते थे कि अपने अधीनस्थ पदाधिकारियों को कितना अधिकार देना है एवं उनके स्वविवेक में किस अंश तक हस्तक्षेप करना है। जितने दिन वे लोक-सभा के अध्यक्ष रहे, उन्होंने सचिवालय में एक भी व्यक्ति की नियुक्ति करने के लिये सिफारिश नहीं की। एक बार उन्होंने अहमदाबाद से लिखा था कि उनके एक अभिन्न मित्र का, जो राजनीति में उनके गुरु भी रहे थे, लड़का सचिवालय में नौकरी पाने के लिये उनके पास आया था, अतः उसके प्रार्थना पत्र पर गुणावगुण के आधार पर विचार किया जाये, साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि चुनते समय उनकी सिफारिश को महत्व न दिया जाये। ऐसा हुआ कि उस लड़के को नहीं चुना गया, किन्तु दादासाहब ने कभी भी यह नहीं पूछा कि उस लड़के का क्या हुआ। यही एक ऐसा मामला था, जिसमें उन्होंने सिफारिश की थी।

दादासाहब ने अपने परामर्शदाताओं एवं अधीन पदाधिकारियों के कार्यों का सदैव समर्थन किया बशर्ते कि उन्होंने वह कार्य सद्भावना के साथ किया हो। अपने परामर्शदाताओं पर वे बहुत भरोसा करते थे और ऐसा कहते भी थे। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव सारे कार्यालय पर छाया रहता था, किसी भी व्यक्ति ने कभी भी कोई ऐसा कार्य नहीं किया जो निम्न स्तर का हो और न कभी उसके बारे में सोचा हो। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति यह जानता था कि यदि दादासाहब ने उसके कार्य को कहीं गलत बताया तो उसकी स्थिति क्या होगी। इस प्रकार अपने व्यवहार एवं चरित्र के आधार पर उन्होंने सम्मान प्राप्त किया और जिस कसी के सम्पर्क में आये, उसमें न्यायप्रियता, अनुशासन और व्यक्ति-निरपेक्षता की भावना उत्पन्न की। इसका परिणाम यह हुआ कि समस्त कार्यालयों के कर्मचारियों में कर्तव्य-निष्ठा एवं उच्च स्तर की कार्य कुशलता बढ़ी।

दादासाहब को प्रशासकीय कठिनाइयों, कमियों एवं अच्छी बातों का बहुत ज्ञान था। प्रायः वह कहा करते थे कि एक केन्द्रीय मंत्री को नगरपालिका के प्रशासन तथा राज्य प्रशासन का अनुभव होना चाहिये ताकि उसे स्थानीय समस्याओं का ज्ञान हो जाये और स्थानीय आवश्यकताओं एवं केन्द्रीय भागों को अच्छी तरह समझ सके। वह विकेन्द्रित प्रशासन के महान् समर्थक थे। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि प्रशासन में जब तक प्रत्येक व्यक्ति को पूरा दायित्व एवं स्वेच्छा से कार्य करने का अवसर नहीं दिया जायेगा, तब तक उसके परिणाम उतने अच्छे नहीं होंगे जितनी कि वर्तमान समय में आवश्यकता है। प्रशासकीय समस्याओं का हल करने में भी वह वास्तविकता का आधार अपनाते थे। वह जानते थे कि सुधार धीरे-धीरे एवं प्रभावशाली रूप में लागू किये जा सकते हैं बशर्ते कि कोई व्यक्ति उनकी विस्तृत बातों में जानकारी रखता हो। एक दिन एक युवा व्यक्ति ने जो हाल में ही मंत्री बने थे कुछ ऐसे उपबन्धों के बारे में उनसे चर्चा की, जिनको वह मंत्री बनने के पश्चात् लागू करना चाहते थे। दादासाहब ने अनुभव किया कि उनकी भावनायें एक शांत, गंभीर एवं परिपक्व व्यक्ति की न होकर एक भावुक व्यक्ति जैसी हैं, अतः उन्होंने उत्तर दिया " कि इस प्रशासकीय यंत्र ने भूतकाल में सभी प्रशासकों को दफना दिया है और कोई भी प्रशासक इस पर अभी तक विजय प्राप्त नहीं कर सका है "। बाद में ऐसा हुआ कि वह मंत्री महोदय उन सुधारों को जो उनके मस्तिष्क में थे लागू तो कर ही नहीं पाये, उल्टे वे वातावरण के शिकार हो गये हैं और बाद को पूर्ण असफल सिद्ध हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशासन के बारे में उनकी राय एक यह थी कि जो व्यक्ति अपना कार्य जल्दी एवं कुशलता से करते हैं वे हमेशा चरित्र का दिखावा नहीं करते और जो चरित्र का दिखावा करते हैं वे अशक्त होते हैं। उनका विचार था कि एक प्रशासक की सफलता चरित्रवान् और कुशल व्यक्तियों को पाने और उन पर अटूट विश्वास रखने में है।

पीठासीन पदाधिकारियों के सम्मेलन, प्राक्कलन समिति, लोक लेखा समिति, अधीनस्थ विधान समिति के सदस्यों, समितियों के अध्यक्षों आदि की बैठकों में दादासाहब ने जो भाषण दिये हैं वे प्रशासकीय सत्य से ओतप्रोत हैं और प्रशासन में मानवीय स्वभाव के गूढ़ ज्ञान और एवं अनुभव के परिचायक हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रारम्भिक दिनों में विभिन्न संसदीय समितियों का पथ-प्रदर्शन करने का दुःसह कार्य, जो कि यहां के लिये नई ही थी, तथा कार्यपालिका एवं समितियों के बीच मतभेद हो हल करने का कार्य भी उन्हीं पर था। उनकी अमूल्य राय सभी चाहते थे और सबको अबाध रूप से मिलती थी। इससे मामले सुलझ गये तथा ऐसी सुदृढ़ नींव पड़ी, जिस पर अटूट सम्बन्ध आज आधारित हो चुके हैं तथा भविष्य में और भी दृढ़ होते जायेंगे। उनके शब्द सदैव हमें प्रभावित करते रहेंगे और सचिवालय में आज इस बात के बारे में स्थिरता तथा विश्वास है कि किसी भी समस्या का समाधान उनके अमर शब्दों में हमें मिल जायेगा, भले ही वह कितना ही कठिन हो।

दादासाहब सदैव ही बड़ी शीघ्रता से कार्य करते थे और कोई भी मामला उनके पास कभी एक दिन से अधिक निलम्बित नहीं रहा। बिना इस बात को महत्व दिये कि यह महत्वपूर्ण है अथवा नहीं, प्रत्येक मामल को उन्होंने बड़ी सावधानी से देखा और अपने निर्णय दिये। उनके ये स्थायी आदेश थे कि उनके निर्णय देने के पश्चात् यदि किसी मामले को फिर से उनके विचारार्थ रखा जाता है, तो बिना किसी डर के प्रस्तुत करना चाहिये। वह विषयनिष्ठ दृष्टिकोण से ही कार्य करते थे, अतः उन्होंने यह कभी नहीं सोचा कि वह भूल नहीं करते अथवा गलती नहीं करते। वह बहस करते थे, ध्यान-पूर्वक बात सुनते थे और अपने निर्णय में परिवर्तन भी करते थे, बशर्ते कि वह इस बात से सहमत हो जाते थे कि ऐसा करना ठीक है। उन्होंने महत्वपूर्ण एवं सामान्य बातों को एक ही सा महत्व दिया और उनमें कोई अन्तर नहीं किया।

दादासाहब ने प्रत्येक नये कार्य में रुचि दिखाई। उन्होंने इन सभी कार्यों में उसी नवयुवक की भांति रुचि दिखाई, जिसने मानों अपना जीवन अभी आरम्भ किया हो। उन्होंने प्रत्येक कार्य में जिसे उन्होंने ठीक समझा काफी रुचि दिखाई और उसे पूरा करने के लिये पूरा साथ दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत थोड़े समय में बहुत आसानी से बहुत से सुधार एवं परिवर्तन किये जा सक। वह स्वयं भी हमेशा नई-नई बातें सोचा करते थे। उन्होंने इस बात का अनुभव किया कि संसद् सदस्यों को सचिवालय से सहायता मिलनी चाहिये। इसके लिये उन्होंने गवेषणा तथा निर्देश शाखा खोली और प्रारम्भ से ही इसके कार्यों में पथ-प्रदर्शन किया। उनका स्पष्ट विचार था कि पत्रिकाओं, समाचारपत्रों, और पुस्तकों में जो विस्तृत जानकारी होती है, उसे पढ़ने के लिये संसद् सदस्यों के पास समय नहीं होता। उनका विचार था कि इस प्रकार की सूचना सदस्यों को सार रूप में दी जाये। अतः उन्होंने सुझाव दिया कि लेखों, प्रतिवेदनों, अधिनियमों, समाचार आदि के सार निकाले जायें, ताकि सदस्य कम से कम समय में बहुत सी जानकारी पढ़ सकें, तत्व बात को समझ सकें और अवकाश में पढ़ने के लिये मसाला छांट सकें। उन्होंने इस बात का भी अनुभव किया कि संसद् के वाद-विवाद की प्रतियां सदस्यों द्वारा पूरी नहीं पढ़ी जातीं, क्योंकि उनके लिये यह संभव नहीं है कि इतने प्रकाशन को पूरा पढ़ सकें। अतः उन्होंने सुझाव दिया कि वाद-विवाद का सत्र के अनुसार सार तैयार किया जाये और छोटी सी पुस्तिका के रूप में उसे प्रकाशित किया जाये ताकि सब सदस्यों को इस बात का ज्ञान हो जाये कि अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदस्य कितना कार्य कर रहे हैं और किसी विषय विशेष पर कितना कार्य हुआ है। जैसे ही इसका प्रकाशन आरंभ हुआ, सदस्यों ने इसकी प्रशंसा की और तबसे सत्र के दौरान में यह वाद-विवाद सार प्रति सप्ताह प्रकाशित किया जाता है। दादासाहब ने यह भी अनुभव किया कि इस प्रकार की जानकारी और विशेषत: संसदीय प्रकाशनों की, तथा सरकार द्वारा जारी किये जाने वाले अन्य उपयोगी प्रकाशनों की जानकारी सदस्यों एवं जनता को सस्ते दामों पर उपलब्ध कराई जायें। अत: इसके लिये संसद् में उन्होंने एक विक्रय विभाग प्रारम्भ किया और शीघ्र ही यह संसद् सदस्यों एवं संसद् देखने आने वाली जनता में लोकप्रिय हो गया।

दादासाहब की कार्य प्रणाली में मानवता का पुट था और वे सच्चे समाजवादी थे वह प्रत्येक व्यक्ति से विना इस बात का ध्यान दिये कि समाज में उसका क्या स्थान है, बातचीत करते थे और सामाजिक ढांचे में जो व्यक्ति जितना छोटा होता वह उसके साथ बातचीत करने में उतनी ही सहानुभूति एवं दयालुता से काम लेते और उनमें कुछ ऐसी विचित्र बात थी जिसके कारण उन्होंने कभी अनुशासन भंग नहीं किया, सम्मान एवं अनुपात-भावना म कमी नहीं आने दी। लोगों से बातचीत करने का उनका ढंग निराला था। बहुत सी बातों की स्वयं जानकारी प्राप्त करने की उनकी प्रकृति थी। मृत्यु से मुश्किल से एक महीना पहले ही रात के समय सचिवालय के कमरों को एवं कर्मचारियों को वहा कार्य करते हुए देखा था। उनकी बड़ी लालसा थी कि भारत जिस प्रकार उन्नति कर रहा है, उसके इस नये रूप को वह देखें। वह परियोजनाओं, संस्थाओं, तथा अन्य कार्य क्षेत्रों को देखने के लिये गये और यहां तक कि जब उनका अंत आया तो वह विशाखापटनम् में हिन्दुस्तान शिपयार्ड देखने के लिये गये थे। वह सदैव यह अनुभव करते थे कि एक प्रशासक को उन सभी परिस्थितियों की पूरी-पूरी जानकारी होनी चाहिये, जिनके अधीन लोग कार्य कर रहे हैं और जो कुछ हो रहा है उसको व्यक्तिगत रूप से देख कर उसका मूल्यांकन करना चाहिये और क्रियाओं एवं बातों से यह बताना चाहिये कि अच्छे कार्यो का पुरस्कार एवं प्रोत्साहन मिलेगा और बुरे कार्यों को बुरी दृष्टि से देखा जायेगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि वह निष्ठावान्, सुदृढ़ विचार वाले एवं साहसी भक्ति थे। इसके अतिरिक्त उनका दृश्य सहानुभूति से ओत-प्रोत था जिसका पता उनके सहानुभूतिपूर्ण शब्दों, प्रोत्साहन, एवं सुसंगत निर्णयों से चलता है। हालांकि उनके प्रशासक एवं उनके अधीन कार्य करने वाले पदाधिकारी उनकी महानता एवं उन संस्था विशेषों क विकास में किये गये उनके अंशदान से भली-भांति परिचित थे, जिनसे कि उनका सम्बन्ध था, किन्तु फिर भी विनयपूर्वक वे कहा करते थे कि "यह मेरा सौभाग्य है कि मेरे पास सचाई से कार्य करने वाले व्यक्ति हैं और वे मुझे अपना सर्वस्व दे रहे हैं तथा अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा तथा लगन रखते हैं"। अच्छा कार्य करने के कारण जो श्रेय मिलता था और जो वास्तव में नियमत: उनका था, उसे वह अपने सहयोगियों एवं अधीनस्थ पदाधिकारियों को दन के लिये सदैव तत्पर रहते थे। इस प्रकार उन्होंने अपने चारों ओर एक सुखी परिवार सा बना लिया था।

दादासाहब प्राय: कहा करते थे कि एक दाशनिक जो अपने विचारों को क्रियात्मक रूप नहीं देता वह तो उस व्यक्ति के समान है जो अपने कन्धों पर बहुत सी पुस्तक लादे जा रहा है किन्तु यह नहीं जानता कि उन पुस्तकों में क्या है। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि एक वह व्यक्ति, जो कुछ सिद्धांतों को परिपालन जीवन की वास्तविकता में करता है और थोड़ा सा दर्शन जानता है, वह उस व्यक्ति से कहीं अच्छा है, जो जानता तो बहुत है किन्तु उसका परिपालन बहुत कम करता है। मेरा अनुभव तो यह है कि दादासाहब ने अपने जीवन एवं कार्यों से इस बात का दिग्दर्शन कराया कि वह एक सच्चे चरित्रवान् व्यक्ति थे और उन्होंने अपने जीवन एवं अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के जीवन को किस प्रकार गौरवान्वित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८०५ ३२,०६२

: ५ :

भारत तथा विदेशों से प्राप्त संदेशों एवं श्रद्धांजलियों से उद्धरण

राष्ट्रपति : श्री मावलंकर के निधन का समाचार पाकर बड़ा दु:ख हुआ। उनकी मृत्यु से हमने एक महान देशभक्त, समाज सुधार के लिये अथक कार्यकर्त्ता, और एक महान् अध्यक्ष खो दिया है। उनके निधन से विशेषत: समाज सेवा और संसदीय कार्य में रुचि रखने वाले सभी व्यक्ति विशेष दु:खी होंगे।

उपराष्ट्रपति : महान् दु:ख हुआ। हमने एक समाजसेवक और एक महान् अध्यक्ष खो दिया।

प्रधान मंत्री : श्री मावलंकर के इस निधन ने लोक-सभा को एक प्रकार से मुखिया विहीन निकाय बना दिया है। उनकी मृत्यु से एक ऐसी रिक्तता आ गयी है जिसकी पूर्ति करना कठिन है।

श्री के० एम० मुन्शी (राज्यपाल, उत्तर प्रदेश) : श्री मावलंकर के निधन के समाचार से सम्पूर्ण देश दु:खी है। वे एक अग्रगामी देशभक्त थे, जिन्होंने अपनी सहानुभूति पवित्र दृष्टिकोण एवं स्वार्थ-हीनता के कारण उन सभी व्यक्तियों पर अपनी छाप छोड़ी जो उनके सम्पर्क में आये।

श्री हरेकृष्ण महताब (बम्बई के भूतपूर्व राज्यपाल) : एक महान् संसदविज्ञ, महान् समाज सेवक और मधुर स्वभाव वाले व्यक्ति के निधन पर सम्पूर्ण देश शोक प्रकट करेगा। भारतीय संसद् के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने ऐसे पूर्वोदाहरण बनाये हैं, जिनका अनुसरण आगे आने वाली पीढ़ियां करेंगी।

श्री चन्दू लाल त्रिवेदी (राज्यपाल, आंध्र) : श्री मावलंकर हमारे महान् एवं वीर नेताओं में से एक थे।

श्री एम० थिरुमलराव (भूतपूर्व उप-राज्यपाल, विन्ध्य प्रदेश) : श्री मावलंकर की मृत्यु से संसदीय लोकतंत्र का कर्मठ एवं विद्वान उन्नायक उठ गया है। बम्बई विधान-सभा तथा भारत की स्वतन्त्र संसद् के अध्यक्ष रह कर वे निर्वाचित संसद् के कार्य संचालन और सांवैधानिक प्रक्रिया के निर्वचनकर्ता के रूप में अपनी अमिट छाप छोड़ गये हैं।

श्री रोकम् लक्ष्मी नरसिंहन् डोरा (भूतपूर्व अध्यक्ष, आंध्र विधान-सभा) : श्री मावलंकर की मृत्यु से संसद् ने एक अच्छा अध्यक्ष और देश ने एक महान् नेता खो दिया है।

श्री कुलधर चालिहा (अध्यक्ष, आसाम विधान-सभा) : श्री मावलंकर, अध्यक्ष लोक-सभा के आकस्मिक एवं असामयिक निधन से मुझे बहुत दु:ख हुआ है।

श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद वर्मा (अध्यक्ष, विहार विधान-सभा) : विभिन्न राज्य विधान मंडलों के अध्यक्षों में श्री मावलंकर का स्थान सर्वोच्च था।

श्री डी० के० कुन्ते (भूतपूर्व अध्यक्ष, बम्बई विधान-सभा) : श्री मावलंकर के निधन से भारत ने एक महान् संसदविज्ञ खो दिया है। श्री मावलंकर एक बड़े समाज सुधारक, प्रिय मित्र और देश के नव-युवकों के लिये पथप्रदर्शक थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री के० एल० दुबे (अध्यक्ष, मध्य प्रदेश विधान-सभा) : श्री मावलंकर की मृत्यु से देश ने एक महान् अध्यक्ष प्रजातंत्र का पक्का समर्थक, और एक योग्य व्यक्ति खो दिया है ।

श्री एन० गोपाल मेनन (भूतपूर्व अध्यक्ष, मद्रास विधान-सभा) : श्री मावलंकर एक अनुकरणीय अध्यक्ष एवं महान् संसदविज्ञ थे ।

डा० पी० वी० चेरियन (सभापति, मद्रास विधान-परिषद्) : श्री मावलंकर बहुत ही योग्य व्यक्ति थे और प्रत्येक सम्मेलन में हम उनकी दिग्दर्शक एवं आदेशों की प्रतीक्षा किया करते थे । हमने एक बहुत ही अच्छे व्यक्ति को खो दिया है ।

श्री एस० के० मुकर्जी (सभापति, पश्चिमी बंगाल विधान-सभा) : श्री मावलंकर का जीवन प्रतिभा, सम्मानों, और व्यस्त सेवा कार्य से परिपूर्ण था । वह अपनी कुशलता, आकर्षण और भाषण से भारत के विभिन्न विधान मंडलों तथा भारतीय संसद् के लिये धीरे-धीरे प्रतिष्ठित परम्परायें एवं प्रथायें बना रहे थे ।

श्री के० आर० वैद्य (भूतपूर्व हैदराबाद विधान-सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष) : दादासाहब मावलंकर के निधन का दु:खद समाचार पाकर बड़ा शोक हुआ ।

श्री जी० आर० रेन्जू (जम्मू तथा काश्मीर विधान-सभा के अध्यक्ष) : श्री मावलंकर के दु:खद निधन से बड़ा शोक हुआ । उनकी मृत्यु से संसदीय लोकतंत्र का महान् निर्माता, महान् न्यायवेता, और एक महान् नेता खो गया है ।

श्री एच० एस० रुद्रय्या (मैसूर विधान-सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष) : श्री मावलंकर के स्थान की पूर्ति करना असंभव है और उससे अधिक असंभव बात है अध्यक्ष के लिये उस स्तर को बनाये रखना, जिसकी स्थापना उन्होंने की थी । उन्होंने जो आदेश दिये हैं वे हमेशा काम आयेंगे । विधान-मंडल की स्वतन्त्रता का सारा श्रय उन्हीं के प्रयत्नों को है और उन्होंने उस कार्य को पूरा किया जिसे विट्ठल भाई ने प्रारम्भ किया था ।

स्वर्गीय श्री के० टी० भाष्यम् (मैसूर विधान-परिषद के तत्कालीन सभापति) : श्री मावलंकर ने संसदीय लोकतंत्र की उच्चतम परम्पराओं की स्थापना की और विधान मंडल की प्रतिष्ठा एवं सम्मान को बढ़ाया । उनकी लोक-सभा के अध्यक्ष की पदावधि उनके व्यक्तिगत एवं वर्तमान भारत के इतिहास में एक उत्कृष्ट अध्याय है । उनकी मृत्यु से देश ने एक महान् नेता खो दिया है ।

श्री नरोतम लाल जोशी (अध्यक्ष, राज्य विधान-सभा) : श्री मावलंकर की मृत्यु से भारत ने एक योग्य और अनुभवी व्यक्ति को खो दिया है । श्री मावलंकर संसदीय जीवन में धीरे-धीरे किन्तु स्थायी एवं स्वस्थ परम्पराओं की स्थापना कर रहे थे, उनकी मृत्यु से देश की एक अपूर्व क्षति हुई है ।

श्री मगन लाल बी० जोशी (भूतपूर्व अध्यक्ष, सौराष्ट्र विधान-सभा) : दादासाहब मावलंकर के दु:खद समाचार को पाकर मुझे तथा सभा के सदस्यों को बहुत दु:ख हुआ है । उनकी मृत्यु राष्ट्रीय हानि है । वे लोकतंत्रीय स्वतन्त्रता के उन्नायक और संसदीय परम्पराओं के महान् प्रतिरक्षक थे ।

श्री प्रेमचन्द भगन लाल शाह (भूतपूर्व उपाध्यक्ष, सौराष्ट्र विधान-सभा) : दादासाहब के निधन का दु:खद समाचार पाकर भारी अघात पहुंचा । उनकी मृत्यु से राष्ट्र का एक महान् संसदवेत्ता, योग्य अध्यक्ष और देशभक्त खो गया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री वी० गंगाधरन (भूतपूर्व अध्यक्ष, त्रावणकोर-कोचीन विधान-सभा) : श्री मावलंकर के संसदीय परम्पराओं सम्बन्धी गहरे ज्ञान और उनके चरित्र की प्रतिष्ठा ने उन्हें न केवल भारत में ही अपितु समस्त लोकतंत्रीय संसार में संसदीय मामलों के बारे में उन्हें एक प्रामाणिक व्यक्ति बना दिया था। हमारे बीच से ऐसे महान् व्यक्तित्व के उठ जाने से भारत का संसदीय जीवन एक प्रकार से निर्धन-सा हो जायगा।

श्री एन० सी० भार्गव (भूतपूर्व अध्यक्ष, अजमेर विधान-सभा) : एक अच्छे रचनात्मक कार्यकर्ता के अतिरिक्त श्री मावलंकर विधानमंडलों के अधिकारों—केन्द्रीय और राज्यीय विधानमंडलों—के अच्छे संरक्षक थे और इन अधिकारों को कार्यपालिका के अतिक्रमण से बचाने वाले थे। उनकी मृत्यु से लोकतंत्र ने, जो अभी इस देश में शिशुरूप में ही है, एक महान् व्यक्ति को खो दिया है।

डा० सुशीला नायर (भूतपूर्व अध्यक्ष, दिल्ली विधान-सभा) : श्री मावलंकर, भारत के संसदीय परम्पराओं के पिता थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् संसद् के प्रथम अध्यक्ष के नाते उनके ऊपर ठोस संसदीय परम्पराओं की स्थापना करने का उत्तरदायित्व था।

श्री जयवंत राम (भूतपूर्व अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश विधान-सभा) : श्री मावलंकर एक महान् संसद्विज्ञ थे, एवं भारत के विभिन्न विधान मंडलों के अध्यक्षों के लिये वे मित्र एवं पथ-प्रदर्शक थे। उन्होंने कुछ ऐसे पूर्वोदाहरण स्थापित किये हैं, जिनके बिना हाल में बनाये गये विधान-मंडलों की भविष्य की प्रगति वास्तव में बड़ा कठिन कार्य हो जाती।

श्री बी० गोपाल रेड्डी (आंध्र के तत्कालीन मुख्य मंत्री) : श्री मावलंकर का निधन समाचार को सुनकर बड़ा शोक हुआ। अपनी तथा अपनी सरकार की ओर से, लोक-सभा को जो क्षति हुई है उसके लिये मैं अपनी हार्दिक समवेदनायें भेजता हूं।

डा० श्रीकृष्ण सिंह (मुख्य मंत्री, बिहार) : श्री मावलंकर भारत के प्रतिष्ठित पुत्र थे। उनकी मृत्यु से भारत निर्धन हो गया है।

श्री मुरारजी देसाई (तत्कालीन मुख्य मंत्री, बम्बई) : श्री मावलंकर की मृत्यु से भारत ने एक ऐसे अध्यक्ष को खो दिया है, जिसके लिये कोई भी देश गर्व कर सकता है। स्वतन्त्र भारत की प्रथम लोक-सभा को श्री मावलंकर ने जो रूप दिया है तथा जिन परम्पराओं की उन्होंने स्थापना की है, वे देश में लोकतन्त्र की सुदृढ़ नींव डालने में बहुत दिनों तक काम आयेगी। श्री मावलंकर की मृत्यु से देश को जो क्षति हुई है वह अपूर्व है।

स्वर्गीय रवि शंकर शुक्ल (तत्कालीन मुख्य मंत्री, मध्य प्रदेश) : श्री मावलंकर महात्मा गांधी के अनुयायी थे और जिस किसी क्षेत्र में उन्होंने कार्य किया वह तनमन से निभाया।

श्री कामराज नाडर (मुख्य मंत्री, मद्रास) : श्री मावलंकर संसद् के अतिविशिष्ट अध्यक्ष थे।

श्री प्रताप सिंह कैरों (मुख्य मंत्री, पंजाब) : नवीन संविधान के अधीन निर्वाचित संसद् के प्रथम अध्यक्ष के रूप में श्री मावलंकर का स्थान राष्ट्रीय जीवन में अद्वितीय था। तथा स्वतन्त्र भारत में संसदीय संस्थाओं के प्रतिष्ठापन और प्रगति के लिये उन्होंने बहुत कार्य किया।

डा० सम्पूर्णानन्द (मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश): श्री मावलंकर ने ऐसी परम्पराओं एवं प्रथाओं की स्थापना की, जो भविष्य में हमारा दिग्दर्शन करेंगे। जिस ढंग से उन्होंने लोक-सभा की कार्यवाहियों का संचालन किया उसके कारण सभा के सभी वर्गों से उन्हें सम्मान मिला था।

डा० बी० सी० राय (मुख्य मंत्री, पश्चिमी बंगाल) : श्री मावलंकर को, उनकी प्रतिष्ठा, उनके चरित्र, उनके निर्णय, एवं कार्य के प्रति लगन के कारण बहुत ऊंचा सम्मान मिला था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० बी० रामकृष्ण राव (भूतपूर्व मुख्य मंत्री, हैदराबाद) : श्री मावलंकर की मृत्यु के दुःखद समाचार को सुनकर बड़ा दुःख हुआ। उनकी क्षति से देश की अपूर्य हानि हुई है।

श्री बख्शी गुलाम मुहम्मद (प्रधान मंत्री, जम्मू तथा काश्मीर) : स्वतन्त्रता संग्राम में तथा संसदीय जीवन के निर्माता के रूप में श्री मावलंकर ने जो कार्य किया है वह अमर रहेगा।

श्री के० हनुमन्तैया (भूतपूर्व मुख्य मंत्री, मैसूर) : श्री मावलंकर की मृत्यु से देश ने एक महान् गांधीवादी नेता, देशभक्त तथा एक ऐसे व्यक्ति को खो दिया है, जिसने सामाजिक कार्य क्षेत्र में अनूठा कार्य किया है। अध्यक्ष पद पर उनकी उपस्थिति अत्यन्त आवश्यक थी। समस्त भारत में उन जैसा अध्यक्ष मिलना कठिन है।

श्री मोहनलाल सुखाडिया (मुख्य मंत्री, राजस्थान) : श्री मावलंकर की मृत्यु से देश ने एक महान् संसद्विज्ञ तथा अच्छे विधि-वेत्ता को खो दिया है। वे एक अच्छे समाज सेवक थे।

श्री गुरुमुख निहाल सिंह (राज्यपाल, राजस्थान) : श्री मावलंकर की मृत्यु पर सम्पर्ण राष्ट्र शोक मना रहा है। वे जिस पद पर थे, उसकी उन्होंने प्रतिष्ठा बढ़ाई, और उनकी गणना इतिहास में महान् संसद्विज्ञ अध्यक्षों में की जायेगी।

श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर (केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री) : श्री मावलंकर की मृत्यु से स्वास्थ्य मंत्रालय और विशेष रूप से स्थानीय सरकारी सेवाकार्यों में जो व्यक्ति लगे थे, उन्होंने एक अग्रज खो दिया है।

श्री कृष्ण मैनन (बिना विभाग के केन्द्रीय मंत्री) : श्री मावलंकर की मृत्यु से भारत ने एक ऐसे महान् संसद्विज्ञ और राजनीतिज्ञ व्यक्ति को खो दिया है, जिसने भारत के राजनैतिक जीवन में अध्यक्ष पद की प्रतिष्ठा को बढ़ाया था।

श्री सत्यनारायण सिंह (संसद्-कार्य मंत्री) : श्री मावलंकर की मृत्यु से जो स्थान रिक्त हुआ है, उसकी पूर्ति और विशेषरूप से लोक-सभा के अध्यक्ष के स्थान की पूर्ति करना कठिन होगा।

श्री महावीर त्यागी (प्रतिरक्षा संगठन मंत्री) : श्री मावलंकर की स्मृति विश्वस्तता, सद्भाव और आदर्श चरित्र के प्रतीक रूप में बनी रहेगी।

श्री अ० चं० गुह (राजस्व तथा प्रतिरक्षा व्यय मंत्री) : श्री मावलंकर की मृत्यु हमारे देश के संसदीय जीवन की वास्तविक हानि और संभवतः समस्त संसार के संसदीय लोकतंत्र की हानि है।

श्री सी० सुब्रह्मण्यम (वित्त मंत्री, मद्रास) : श्री मावलंकर योग्य अध्यक्षों में से एक थे और उनकी मृत्यु से जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना कठिन है।

श्री रामचन्द्र राव (भूतपूर्व विधि मंत्री, मैसूर) : श्री मावलंकर की मृत्यु देश के लिये अपूर्य हानि है। उनकी दुःखद मृत्यु से जो कमी हुई है, उसकी पूर्ति होना कठिन है। वे महान् अध्यक्ष थे और उन्होंने जिन परम्पराओं की स्थापना की है वे बहुत दिनों तक रहेगी।

श्री बी० के० कौल (भूतपूर्व गृह मंत्री, अजमेर) : श्री मावलंकर के योग्य पथ-प्रदर्शन में बहुत सी स्वस्थ परम्परायें और पूर्वोदाहरण स्थापित किये गये हैं, जो संसदीय लोकतंत्र के लिये आवश्यक है। राजनैतिक दलों का उनमें पूर्ण विश्वास था।

श्री ब्रह्म प्रकाश (भूतपूर्व विकास मंत्री, दिल्ली) : राजनैतिक, क्रियाकलापों, समाज सेवाओं और शिक्षा तथा संसदीय प्रक्रिया के क्षेत्र में श्री मावलंकर द्वारा किया गया कार्य इस देश में सदा ही स्मरणीय रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री यू० एन० ढेबर (अध्यक्ष, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस) : दाद मावलंकर द्वारा लोकतंत्र के लिये किये गये कार्य राष्ट्र द्वारा सदैव ही याद रखे जायेंगे । जिस दिन से अध्यक्ष पद का भार उन पर पड़ा उसी दिन से उन्होंने दिल और दिमाग की पूर्ण योग्यता से उन्हें निभाया और वह हमेशा याद रखा जायेगा ।

श्री देवदास गांधी : लोक-सभा के पिता के नाते समाचारपत्र दीर्घा के प्रति वे सदैव ही सहृदय रहे । दादासाहब सन्त प्रकृति के व्यक्ति थे । इतने ऊंचे पद पर होते हुए भी उन्होंने जीवन में सादगी अपनाई थी ।

श्री सी० राजगोपालाचारी (भारत के भूतपूर्व महाराज्यपाल) : श्री मावलंकर के निधन से प्रत्येक व्यक्ति को, जो इस सीधे सच्चे और परिश्रमी व्यक्ति को जानता था, बहुत दुःख होगा । भारत का एक अच्छा नागरिक चला गया । संसद् उनकी मृत्यु पर उसी प्रकार शोक प्रकट करेगी जिस प्रकार कि परिवार में मुखिया की मृत्यु पर परिवार द्वारा शोक प्रकट किया जाता है ।

श्री मंगलदास पकवासा (मध्य प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल) : देश ने न केवल एक महान् देशभक्त ही खोया है, अपितु लोकतंत्र का एक महान् निर्माता भी खो दिया है ।

श्री के० सन्थानम् (भूतपूर्व उपराज्यपाल, विन्ध्य प्रदेश) **:** श्री मावलंकर की मृत्यु सार्वजनिक जीवन के लिये दूसरा आघात है । वे बहुत ही योग्य एवं जन सेवी भावना वाले व्यक्ति थे। स्वतन्त्र भारत की प्रथम संसद् के अध्यक्ष के रूप में उनका कार्य संसार के महान् अध्यक्षों के कार्य की तुलना में रखा जा सकेगा । भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में उनका स्थान सम्मानीय रहेगा ।

श्री जे० बी० कृपालानी : लोक-सभा में प्रजासमाजवादी दल के नेता श्री मावलंकर की मृत्यु से लोक-सभा का महान् व्यक्ति चला गया है ।

श्री एस० के० पाटिल (अध्यक्ष, बम्बई प्रदेश कांग्रेस समिति) **:** श्री मावलंकर की मृत्यु देश के लिये एक बहुत बड़ा आघात है, और उन जैसा दूसरा व्यक्ति मिलना कठिन है । श्री मावलंकर एक बहुत बड़े संसद् विज्ञ थे । भारतीय संसद् के लिये यह क्षति अपूर्य है ।

श्री टी० आर० देवगिरिकर (अध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस समिति) : श्री मावलंकर की मृत्यु से भारत बहुत समय के लिये एक ऐसा उनूठा व्यक्ति उठ गया है, जो एक आदर्श विधायक, सज्जन, एक चतुर लेखक एवं अध्यक्ष था ।

डा० सी० पी० रामस्वामी अय्यर (उपकुलपति, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय) : श्री मावलंकर की मृत्यु से भारत ने एक विख्यात एवं वयोवृद्ध नेता खो दिया है ।

डा० बख्शी टेक चन्द : श्री मावलंकर जी की आकस्मिक मृत्यु से मुझे बहुत दुःख हुआ है । उनकी मृत्यु से देश का बहुत बड़ा नेता उठ गया ।

श्री जी० एल० मेहता (वांशिगटन स्थित भारतीय राजदूत) : दूतावास तथा अपनी ओर से लोक-सभा के अध्यक्ष श्री मावलंकर के दुःखद निधन पर, जिनकी मृत्यु एक राष्ट्रीय क्षति है, मैं हार्दिक शोक प्रकट करता हूं ।

मैडागास्कर स्थित भारतीय महावाणिज्य दूत : श्री मावलंकर के निधन पर मैडागास्कर स्थित भारतीय अपना शोक संदेश भेजते हैं ।

२७ फरवरी, १९५६ के असाधारण गजट में भारत सरकार का सन्देश : श्री मावलंकर ने भारत में संसदीय जीवन में एवं संसदीय संस्थाओं के विकास के लिये अनूठा कार्य किया था । स्वतन्त्र भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्रथम संसद् के प्रथम अध्यक्ष के रूप में और बाद को लोक-सभा के अध्यक्ष के रूप में वे वास्तव में लोक-सभा के पिता थे और उन्होंने अपने व्यक्तित्व की छाप से इसे यह वर्तमान रूप दिया और एक नई दिशा दी। श्री मावलंकर की मृत्यु से देश की अपूर्व क्षति हुई है। उनके गुणों की स्मृति जनता के हृदय में रहेगी और आगामी पीढ़ियों को प्रकाश एवं प्रोत्साहन देगी।

संसदीय कांग्रेस दल नई दिल्ली का २८ फरवरी, १९५६ का संकल्प : संसदीय कांग्रेस दल अपने प्रतिनिधि एवं नेता श्री मावलंकर के निधन पर हार्दिक दुःख प्रकट करता है। श्री मावलंकर ने अध्यक्ष के नाते अपनी योग्यता सत्यता एवं निष्पक्षता का परिचय दिया था तथा लोकतन्त्रीय एवं संसदीय संस्थाओं की सुदढ़ नींव डालने में सहायता की थी। यह दल उनके प्रति श्रद्धांजलियां अर्पित करता है।

गांधी स्मारक निधि, दिल्ली के कर्मचारियों का २८ फरवरी, १९५६ का संकल्प : दादासाहब मावलंकर के निधन से निधि ने अपनां मित्र एवं मार्ग दर्शक खो दिया है। यह आघात बहुत गहरा एवं अपूरणीय है।

[भारत की सभी राज्य विधान-सभाओं और विधान-परिषदों ने श्री मावलंकर की मृत्यु पर शोक संकल्प पारित किये थे। उनके प्रति सम्मान प्रकट करन के लिये बहुत से विधान-मंडल एक दिन के लिये स्थगित हो गये थे।]

संसदीय समाचारपत्र दीर्घा संघ : संसदीय समाचारपत्र दीर्घा संघ की यह विशेष बैठक श्री मावलंकर के निधन पर शोक प्रकट करने के लिये हुई है और उनके निधन पर हर्दिक शोक प्रकट करती है। स्वतन्त्र भारत में संसदीय परम्पराओं के विकास में उनका अंशदान देश के इतिहास में रहेगा अमर।

अध्यक्ष अफगान राष्ट्रीय सभा : अफगान राष्ट्रीय सभा का सचिवालय तथा उसके सदस्य लोक-सभा तथा भारत की जनता के प्रति सदन के माननीय अध्यक्ष श्री ग० वा० मावलंकर के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करते हैं।

हाऊस आफ कामन्स, कनाडा के अध्यक्ष : श्री मावलंकर के दुःखद निधन पर मेरी तथा कनाडियन हाऊस आफ कामन्स के सदस्यों की ओर से श्रीमती मावलंकर तथा संसद् सदस्यों को समवेदनायें प्रेषित कर दें।

सर एलबर्ट पेरिस (अध्यक्ष, प्रतिनिधि सभा, लंका) : लोक-सभा के अद्वितीय अध्यक्ष तथा सम्पन्न मित्र श्री मावलंकर के निधन की बात सुन कर अत्यधिक दुःख हुआ। भारतीय स्वतन्त्रता और नवीन भारत के निर्माण में उन्होंने जो कार्य किया है, उसकी मैं प्रशंसा करता हूं। अपन माननीय सदन तथा श्री मावलंकर के परिवार के सदस्यों को मेरी ओर से इस अपूरणीय क्षति के लिये हार्दिक समवेदना भेज दें।

परम श्रेष्ठ एफ० एन० कोमजाला (राजदूत, चैकोस्लोवाकिया गणतंत्र) : भारत गणतंत्र की लोक-सभा के अध्यक्ष श्री ग० वा० मावलंकर के दुःखद निधन पर मुझे बहुत दुःख हुआ है। वह ख्यातिप्राप्त राजनैतिक कार्यकर्त्ता थे।

परम श्रेष्ठ अर्नेस्ट विहेल्म मेअर (राजदूत, जर्मन फेडरल गणतंत्र) : लोक-सभा के अध्यक्ष श्री ग० वा० मावलंकर के दुःखद और आकस्मिक निधन का समाचार पाकर मुझे बड़ा दुःख हुआ।

वास्तव में यह क्षति न केवल हमारे —उनके मित्रों एवं उनके प्रशंसकों की—किन्तु भारत एवं उसकी सम्पूर्ण जनता की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रज नेताओं में से एक थे । उनका राज्य कार्यों में निष्पक्ष स्वभाव कर्तव्य के प्रति उनकी जागरूकता, उनकी प्रतिभा, उनकी राजभक्ति के कारण उन सभी व्यक्तियों में उनके प्रति प्रेम एवं श्रद्धा उत्पन्न हो गई थी, जो उनके सम्पर्क में आये और उनको जानते थे । मैं भी उनमें से एक हूं और उस महान् एवं अद्वितीय व्यक्ति की स्मृति अपने हृदय में संजोये रखूंगा ।

भारत स्थित पाकिस्तान के उच्चायुक्त : लोक-सभा के अध्यक्ष श्री ग० वा० मावलंकर के दुःखद निधन को सुनकर अत्यधिक दुःख हुआ । उनकी मृत्यु से केवल एक योग्य संसद्-विज्ञ ही नहीं उठ गया है । अपितु एक सच्चा देश भक्त भी चला गया है, जिसने अपने देश एवं जनता की सेवा करने के परिणाम-स्वरूप सबका प्रेम एवं सम्मान जीता था । इनकी दुःखद मृत्यु से जो स्थान रिक्त हुआ है, उसकी पूर्ति होना निश्चय ही कठिन है ।

क्लर्क हाऊस आफ कामन्स, इंगलिस्तान : आपके अध्यक्ष की मृत्यु पर हमें बहुत शोक हुआ है । समवेदनायें स्वीकार कीजिये ।

अमेरिकी दूतावास के कार्यवाहक राजदूत, नई दिल्ली : लोक-सभा के माननीय अध्यक्ष श्री ग० वा० मावलंकर के निधन से अमेरिकी दूतावास के हम सभी व्यक्तियों को बड़ा आघात पहुंचा । लोकतंत्रीय संसद् तथा भारत सरकार की इस क्षति पर हम सभी अमेरिकावासी अत्यन्त दुःखी हैं । मैं अमेरिकी सरकार की ओर से हार्दिक समवेदना प्रकट करता हूं ।

श्री जोहन डब्ल्यू मैककोरमाक (अस्थायी अध्यक्ष, प्रतिनिधि सभा अमेरिका) **:** अमेरिकी कांग्रेस के हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव्स के सदस्यों की ओर से अपनी इस हाल की क्षति दुःख में हमारी हार्दिक सहानुभूति स्वीकार करें । लोक-सभा तथा भारत के सार्वजनिक कार्यों के क्षेत्र में श्री मावलंकर ने जो कार्य महत्वपूर्ण किया है उससे आपको अवश्य ही बहुत संतोष मिलेगा ।

यूगोस्लाव जनवादी गणतंत्र के राजदूत परम श्रेष्ठ बोगडन क्रोनोब्रंजा : "मैं और मेरे कर्मचारी लोक-सभा के अध्यक्ष श्री ग० वा० मावलंकर के निधन से हुई महान् क्षति पर व्यथित संसद् सदस्यों और परम श्रेष्ठ आपको हार्दिक शोक संदेश भेज रहे हैं"।

राष्ट्रमण्डल के संसदीय एसोसिएशन, कनाडा शाखा की कार्यकारिणी के सभापति : "अध्यक्ष महोदय श्री मावलंकर के निधन के समाचार को सुन कर मुझे अत्यन्त शोक हुआ है कृपा कर श्रीमती मावलंकर और राष्ट्रमंडल के संसदीय एसोसिएशन की अपनी शाखा के सदस्यों को आप एसोसिएशन की महासभा के प्रमुख सहयोगी के दुःखद निधन पर हमारा शोक संदेश भेज दीजिये"।

राष्ट्र मंडल का संसदीय एसोसिएश इंगलिस्तान : "श्री ग० वा० मावलंकर के निधन पर हमारी हार्दिक समवेदनायें"।

अध्यक्ष, चेम्बर आफ डेपुटीज, बर्मा संघ की संसद् : "लोक-सभा के अध्यक्ष श्री ग० वा० मावलंकर के निधन का समाचार सुनकर खेद हुआ । कृपया सब सम्बन्धित व्यक्तियों को मेरी हार्दिक समवेदना का सन्देश भेज दें"।

सभापति फेडरल, जनवादी सभा की परिषद्, यूगोस्लाविया : "आपके अध्यक्ष श्री ग० वा० मावलंकर के निधन पर हमारी हार्दिक सहानुभूति तथा संवदना स्वीकार कीजिये । लोक-सभा और भारत की जनता को उनके असामयिक निधन से अपूव क्षति पहुंची है"।

चैकोस्लावाकिया की राष्ट्रीय सभा के सभापति : "अध्यक्ष श्री ग० वा० मावलंकर के निधन से लोक-सभा और भारतीय गणतंत्र को जो महान् क्षति पहुंची है, उसके प्रति चेकोस्लोवाकिया गणराज्य की राष्ट्रीय असेम्बली और अपनी ओर से मैं आपको हार्दिक संवेदना का संदेश भेज रहा हूं"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाउस ग्राफ कामन्स, इंगलिस्तान के ग्रध्यक्ष : "ग्रध्यक्ष मावलंकर के निधन को सुनकर ग्रत्यन्त शोक हुग्रा है। कृपया मेरी हार्दिक समवेदनायें स्वीकार कीजिये ग्रौर मेरी समवेदनायें श्रीमती मावलंकर तथा उनके परिवार को भेज दीजिए"।

ग्रफ़गानिस्तान के प्रधान मंत्री : "मैं लोक-सभा के माननीय ग्रध्यक्ष श्री ग० वा० मावलंकर के ग्रसामयिक निधन पर हार्दिक संवेदनायें भेज रहा हूं। ग्रपने देश की सेवा में महत्वपूर्ण कार्य करने वाले इस महान् व्यक्ति के चले जाने से जो क्षति हुई है उसे मेरे साथ मेरे सहयोगी भी बड़े शोक के साथ महसूस करते हैं"।

सूडान के वैदेशिक-कार्य मंत्री : "महान् देशभक्त ग्रौर श्रेष्ठ संसद्विज्ञ श्री मावलंकर के जिनकी स्मृति ग्रनेकों ग्रागामी पीढ़ियों के मार्ग को प्रदीप्त करती रहेगी, निधन से हुई महान् क्षति पर मुझे ग्रत्यधिक शोक हुग्रा"।

ग्रखिल बर्मा भारतीय कांग्रेस के सभापति : "भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम के एक महान् सेनानी, ग्रध्यक्ष श्री मावलंकर के निधन पर ग्रखिल बर्मा भारतीय कांग्रेस ग्रत्यन्त शोक प्रकट करती है। हार्दिक संवेदनायें।"

राष्ट्रमंडल के संसदीय एसोसिएशन के महासचिव सर हावर्ड ग्राफ एगविल : "ग्रापके प्रतिष्ठित ग्रध्यक्ष के निधन से जो क्षति हुई है उसके प्रति ग्राप श्रीमती मावलंकर ग्रौर ग्रपनी शाखा के सदस्यों को राष्ट्रमंडल के संसदीय संघ की महासभा की हार्दिक सहानुभूति तथा समवेदना का संदेश भेज दीजिये। उनके निधन से वैयक्तिक रूप से भी मुझे ग्रत्यन्त शोक हुग्रा है, कृपया मेरी भी हार्दिक समवेदनायें व्यक्त कर दीजिये। हमारे माननीय तथा प्रिय सभापति ने राष्ट्रमंडल के राष्ट्रों में पारस्परिक सौहार्द बढ़ाने में जो कार्य किया है, उसका सदैव प्रशंसा ग्रौर कृतज्ञता के साथ स्मरण किया जायेगा। उनके निधन से जो क्षति हुई है ग्रौर महासभा ग्रौर मुझे जो शोक हुग्रा है उसे व्यक्त करने वाला संदेश भेज दीजिये ग्रौर इस ग्रवसर पर महासभा ग्रौर मेरी ग्रोर से भी पुष्प मालाग्रों का प्रबन्ध कर दीजिये।"

ग्रन्तर्राष्ट्रीय संसदीय संघ के महासचिव, श्री ग्रन्द्रे द ब्लोन : "लोक-सभा के ग्रध्यक्ष के निधन का ग्राकस्मिक समाचार सुन कर मुझे ग्रत्यन्त शोक हुग्रा। मैं ग्रापके द्वारा भारतीय ग्रुप के सब सदस्यों को हार्दिक संवेदना का संदेशा भेजना चाहता हूं।"

एम० ग्रार० ए० के संस्थापक, फ्रैंक बुशमैन : "बर्मा, पापुग्रा, जर्मनी, ब्रिटेन, न्यूजीलैंड, कनाडा ग्रौर ग्रमेरिका सहित ग्राठ राष्ट्रों ने ग्राज ग्रास्ट्रेलिया की राजधानी केनबरा में बड़ी सराहना ग्रौर स्नेह के साथ श्री मावलंकर का स्मरण किया। वे गांधी जी के सच्चे ग्रनुयायी थे। वे ग्रमर हैं।"

चिली के कार्यवाहक दूत श्री मिग्वेल सेरिनो : "संसद् के ग्रध्यक्ष श्री ग० वा० मावलंकर के निधन को सुनकर हमें बहुत ग्राघात पहुंचा है। उनके देहावसान से देश का एक महान् नेता उठ गया है ग्रौर राष्ट्र की वह क्षति ग्रपूर्व है। इस शोक के ग्रवसर पर मैं हार्दिक शोक-संदेश भेजता हूं। कृपया स्वीकार कीजिये।"

परम श्रेष्ठ जे० ग्रुर्डजिसूकी, नई दिल्ली में पोलैण्ड के राजदूत : "भारतीय लोक-सभा के ग्रध्यक्ष, परम श्रेष्ठ श्री मावलंकर के निधन से मुझे बहुत शोक हुग्रा है। उनके निधन से भारत की जनता को ग्रौर विशेषकर संसद् को ग्रपूर्य क्षति हुई है। जिन ग्रसंख्य लोगों को [illegible] है उनमें मैं भी सम्मिलित हूं। ग्रापसे प्रार्थना है कि ग्राप लोक-सभा के सदस्यों ग्रौर दुःखी परिवार को मेरी हार्दिक समवेदनाग्रों का संदेश भेज दें।"

इन्द्र विद्यावाचस्पति
चन्द्रलोक, जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र मण्डल के संसदीय एसोसिएशन की आस्ट्रेलिया शाखा : "अध्यक्ष मावलंकर के निधन से बहुत शोक हुआ है ।"

सूडान की संसद् : "लोक-सभा के अध्यक्ष श्री मावलंकर के निधन से जो क्षति हुई है उसके लिये हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव और सेनेट के अध्यक्ष हार्दिक समवेदनाओं का संदेश भेजते हैं ।"

सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत : सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत ने लोक-सभा के अध्यक्ष श्री गणेश वासुदेव मावलंकर के निधन का समाचार बड़े शोक के साथ सुना है और वह भारत की संसद् के सदस्यों और मृत व्यक्ति के दुखी परिवार के प्रति हार्दिक समवेदनायें व्यक्त करती है ।"

अंतः संसदीय संघ के रूसी संसदीय ग्रुप के सभापति : "अन्तः संसदीय संघ के सम्माननीय सभापति और भारतीय गणतंत्र की संसद् की लोक-सभा के माननीय अध्यक्ष श्री गणेश वासुदेव मावलंकर के निधन पर अन्तः संसदीय संघ का रूसी संसदीय ग्रुप भारतीय अन्तः संसदीय ग्रुप को शोक संदेश भेजता है और प्रार्थना करता है कि वह दिवंगत आत्मा के दुःखी परिवार को हार्दिक समवेदनाओं का संदेश भेज दें ।"

जर्मनी के लोकतंत्रात्मक गणराज्य के पीपुल्स चेम्बर के प्रेसीडेंट : "भारतीय संसद् के अध्यक्ष परम श्रेष्ठ श्री मावलंकर के निधन पर, मैं जर्मनी के लोक-तंत्रात्मक गणराज्य के पीपुल्स चेम्बर की ओर से और अपनी ओर से हार्दिक संवेदना का संदेश भेजता हूं ।"

आस्ट्रेलिया के श्रम मंत्री के, राइट हानरेबिल हैरोल्ड होल्ट, संसद् सदस्य : "आपके प्रख्यात अध्यक्ष और राष्ट्रमंडल तथा उसके आदर्शों के पुजारी की मृत्यु से जो क्षति हुई है, उस पर मैं और आस्ट्रेलिया की संसद् के मेरे सहयोगी हार्दिक संवेदना प्रगट करते हैं ।"

वियतनाम लोकतंत्रात्मक गणराज्य, राष्ट्रीय असेम्बली की स्थायी समिति के सभापति : "भारतीय लोक-सभा के अध्यक्ष परम श्रेष्ठ श्री ग० वा० मावलंकर के निधन का हमें अभी समाचार मिला है । मैं राष्ट्रीय असेम्बली, वियतनाम के लोकतंत्रात्मक जनवादी गणराज्य की जनता की ओर से तथा अपनी ओर से लोक-सभा को तथा भारत की जनता को हार्दिक शोक सन्देश भेजता हूं ।"

श्री अब्दुल वहाब खां, अध्यक्ष, पाकिस्तान संविधान सभा : "श्री मावलंकर एक ऐसे प्रतिष्ठित अध्यक्ष थे, जिन्होंने अपनी योग्यता और अपनी सहृदयता और बुद्धिमत्ता के कारण सभी देशों में विशेषतः संसदीय क्षेत्रों में उच्च ख्याति प्राप्त कर ली है ।"

निम्नलिखित से भी संवेदना संदेश प्राप्त हुए :

१. सचिव, आंध्र विधान-सभा, कुरनूल ।
२. सचिव, संविधान व विधान-सभा, जम्मू और काश्मीर ।
३. सचिव, जम्मू तथा काश्मीर विधान-सभा ।
४. सचिव, मैसूर विधान-मंडल सचिवालय ।
५. सचिव, पैप्सू विधान-सभा, पटियाला ।
६. अध्यक्ष, हिंडोन नगरपालिका ।
७. अध्यक्ष, महुआ नगरपालिका, सौराष्ट्र ।
८. अध्यक्ष, उप्लेटा नगरपालिका ।
९. अध्यक्ष, नगर कांग्रेस कमेटी, राजा मुन्द्री ।
१०. उल्पेटा, कांग्रेस, कचहरी ।
११. उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी तथा कर्मचारी वर्ग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२. सेक्रेटरी यू० पी० मोटर ग्रोपरेशन्स यूनिग्रन, हजरतगंज, लखनऊ ।
१३. मंडवी मरचेन्ट्स एसोसिएशन, कच्छ ।
१४. सीड्स एण्ड ग्रेन्स मरचेन्ट्स एसोसिएशन, जामनगर ।
१५. प्रेसीडेंट, देवास मजदूर सहकारी सभा, देवास ।
१६. प्रिंसिपल, माधव कालेज, उज्जैन ।
१७. एन० डी० कालेज, कनाट प्लेस, नई दिल्ली ।
१८. काल्टेक्स क्लब, नई दिल्ली ।
१९. सेक्रेटरी, पी० डब्ल्यू० डी० स्टाफ यूनिग्रन, भोपाल ।
२०. चेयरमेन तथा सदस्य, सदर्न इंडिया मिल ग्रोनर्स एसोसियेशन ।
२१. टेलीग्राफ इंजीनियरिंग ऐम्प्लायी यूनियन, क्लास ३ ग्रौर लाइन स्टाफ क्लास ४ यूनियन्स, ग्रम्बाला ।
२२. दिल्ली पब्लिक लायब्रेरी स्टाफ एसोसिएशन, दिल्ली ।
२३. ग्रदोनी ग्राउन्ड नट सीड्स एण्ड ग्रायल मरचेन्ट्स, एसोसिएशन ।
२४. सेक्रटरी ग्राल इंडिया इम्पोर्टर्स एसोसिएशन, बम्बई ।
२५. लेबर यूनियन, टी० डी० ई० ऐस० कानपुर ।
२६. सेक्रेटरी, ग्राल इंडिया इक्सपोर्टर्स एसोसिएशन, बम्बई ।
२७. श्री ग्रार० एम० जोशी, काल्बादेवी, बम्बई ।
२८. श्री ग्रतुल्य घोष, संसद् सदस्य ।
२९. पंडित ग्रलगू राय शास्त्री, संसद् सदस्य ।
३०. सचिव बिहार विधान-सभा, पटना ।
३१. सचिव, पेप्सू विधान-सभा, पटियाला ।
३२. न्यायाधीशवर्ग व वकीलवर्ग, पंढरपुर ।
३३. श्री गंगा सभा, हरिद्वार ।
३४. बम्बई प्रदेश भारतीय सेवक सेना, बम्बई ।
३५. सेक्रेटरी, राजकोट चेम्बर्स ग्राफ कामर्स, राजकोट ।
३६. टाटा इंडस्ट्रीज लिमिटेड, नई दिल्ली ।
३७. कार्यपालिका समिति, चाय बोर्ड, कलकत्ता ।
३८. डिवीजनल मैनेजर, जनरल एश्योरेंस सोसायटी लिमिटेड, नई दिल्ली ।
३९. बोम्बे पाइप्स एण्ड फिटिंग्स् मर्चेन्ट्स एसोसिएशन ।
४०. ग्रणुव्रत समिति, कलकत्ता ।
४१. दी एम० जे० क्लाथ मार्केट एसोसिएशन, इंदौर ।
४२. प्रिंसिपल, ग्रहीर कालिज, रेवाड़ी ।
४३. प्रिंसिपल, बुंदेलखंड कालेज, झांसी ।
४४. प्रिंसिपल, गुरुनानक खालसा कालिज, लुधियाना ।
४५. प्रिंसिपल, एस० बी० जे० इंटरमीडियेट कालिज, बिसावर, मथुरा ।
४६. प्रिंसिपल, वैश्य कालिज, भिवानी, जिला हिसार ।
४७. प्रिंसिपल, हीरजी घेला भाई सवला विद्यालय, मटूंगा, बम्बई ।
४८. प्रिंसिपल, जोगेश्वरी इंग्लिश स्कूल, बम्बई ।
४९. प्रिंसिपल, लोक विद्यालय, वर्धा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५०. प्रिंसिपल, सिंधी माडल हायर सेकैंडरी स्कूल, आगरा ।
५१. हैडमास्टर श्री वाडी हाई स्कूल, बड़ौदा ।
५२. सेक्रेटरी, डी० ए० जी० पी० एण्ड टी० यूनियन, दिल्ली ।
५३. सेक्रेटरी, स्टाफ यूनियन सी० बी० आर०, रुड़की ।
५४. ए० ओ० सी० क्लर्कस एसोसिएशन, दिल्ली ।
५५. मेडिकल आफिसर इनचार्ज, गेथिया, सेनेटोरियम, गेथिया (नैनीताल) ।
५६. सेक्रेटरी, विधान-सभा, हिमाचल प्रदेश ।
५७. प्रिंसिपल, गवर्नमेंट ट्रेनिंग कालिज, वैलोर, कटपादि टाउनशिप ।
५८. चेयरमेन, नागपुर इंप्रूवमेंट ट्रस्ट ।
५९. प्रिंसिपल, बहरामपुर टेक्सटाइल इंस्टीट्यूट, बहरामपुर ।
६०. प्रिंसिपल, सेन्ट्रल कालिज, कलकत्ता ।
६१. प्रेसिडेंट, गनी ट्रेड्स, एसोसिएशन ।
६२. प्रेसिडेंट, एसोसिएशन आफ मरचेन्ट्स एण्ड मेन्यूफेक्चर्रस आफ टेक्सटाइल स्टोर्स एण्ड मशीनरी, इंडिया ।
६३. प्रेसिडेंट खरगोदा साल्ट एण्ड गनीवेग्स् मरचेन्ट्स एसोसिएशन ।
६४. वाइस प्रेसिडेंट, एस्कोर्टस एजेन्ट्स ऐम्प्लाईज यूनियन ।
६५. ब्रिटिश फर्नीचर मेन्यूफेक्चरिंग कम्पनी, नई दिल्ली ।
६६. सेक्रेटरी, कस्तूरबा मेमोरियल लायब्रेरी एण्ड फ्री रीडिंग रूम ऐलनकुन्नापुजा ।
६७. सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन, होशियारपुर ।
६८. सेक्रेटरी, डिस्ट्रिक्ट बार एसोसियेशन, करनाल ।
६९. सेक्रेटरी, बार एसोसिएशन, रायचूर ।
७०. सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन, रोहतक ।
७१. प्रिंसिपल, डी० एन० इन्टर कालिज, तिखा, जिला फर्रुखाबाद ।
७२. प्रिंसिपल, डी० एन० जैन महाविद्यालय, जबलपुर ।
७३. प्रिंसिपल, टाउन इंटरमीडियेट कालिज, बलिया, यू० पी० ।
७४. प्रिंसिपल, हितकारिणी कालिज, जबलपुर ।
७५. प्रिंसिपल, मुस्लिम यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स यूनियन, अलीगढ़ ।
७६. सेंट टाम्स मेडिकल कालिज आफ होम्योपैथी एडामुत्तम नाटिका फिटका, वलापद ।
७७. आनरेरी सेक्रेटरी, रोटरी क्लब, अमृतसर ।
७८. प्रेसिडेंट, इंडियन मरचेंट्स चेम्बर चर्च गेट रिक्लेमेशन, बम्बई–१ ।
७९. आनरेरी सेक्रेटरी, साउथ इंडियन एसोसिएशन, (रजिस्टर्ड) कल्याण ।
८०. प्रेसिडेंट, यूथ कांग्रेस कमेटी, नलगोंडा ।
८१. सेक्रेटरी श्री काकुलम् बार एसोसिएशन, श्री काकुलम् ।
८२. प्रिंसिपल, ए० आई० जाट हीरोज मेमोरियल कालिज, रोहतक ।
८३. श्री एम० जी० के० हाई स्कूल, मसूरी, पटना ।
८४. श्री पी० बी० ढोलकिया, १९, पोद्दार ब्लाक, बीसन स्ट्रीट, संताक्रूज, बम्बई ।
८५. प्रिंसिपल, रानी पारवती देवी कालिज, बेलगांव ।
८६. सेक्रेटरी, डी० ए० एस० एसोसिएशन, थेवारा, एरणाकुलम् ।
८७. प्रेसिडेंट, दि सर्वेन्ट्स आफ दि इंडियन डिप्रेस्ड क्लासेज सुसाइटी, पूना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८८. प्रिंसिपल, इंगलिश स्कूल, चकलाशी ।
८९. सेक्रेटरी, पंजाब विधान-सभा, चंडीगढ़ ।
९०. सेक्रेटरी कारपोरेशन ग्राफ कलकत्ता ।
९१. प्रेसिडेंट, श्री भागीरथी, भुवन मितर मंडल ३४, भागीरठी भुवन, बम्बई–४ ।
९२. सेक्रेटरी, दिल्ली हिन्दुस्तानी मरकेन्टाइल एसोसिएशन, चांदनी चौक, दिल्ली–६ ।
९३. हैडमास्टर, माध्यमिक विद्या मंदिर, कनेडी, डाकघर सांगवे, जिला रत्नगिरि ।
९४. हैडमास्टर, बी० जी० ग्रार० खत्री हायर सेकेंडरी स्कूल बिलग्राम (हरदोई) ।
९५. सेक्रेटरी गौड़ सारस्वत सेवा संघम, टी० डी० रोड, एरणाकुलम्–१ ।
९६. सेक्रेटरी, ग्राल ट्रावनकोर-कोचीन बैंक एम्प्लाईज यूनियन, ऐरणाकुलम् ।
९७. सेक्रेटरी, महाराष्ट्र समाज, कैम्बे ।
९८. प्रेसिडेंट, भावनगर नगरपालिका, भावनगर ।
९९. श्री ग्रमर सिंह मेहता, द्वारा श्री बलवन्त सिंह मेहता, एम० पी०, २८ नार्थ ऐवेन्यू, नई दिल्ली ।
१००. प्रिंसिपल, डी० सी० जैन कालिज, फीरोजपुर कैंट ।
१०१. श्री के० रघुरामय्या द्वारा परमानेंट मिशन ग्राफ इंडिया टु० यू० एन०, ३, ईस्ट ६४ वी स्ट्रीट, न्यूयार्क, सं० रा० ग्रमेरिका ।
१०२. श्री रघुवीर सहाय, एम० पो० १०३–नार्थ ऐवेन्यू, नई दिल्ली ।
१०३. सेक्रेटरी, पुंद्री एरिया एसोसिएशन, गुप्ता प्रिंटिंग वर्क्स, ऐसप्लेनेड रोड, दिल्ली ।
१०४. सेक्रेटरी, देवासमंडी मरचेन्ट्स एसोसिएशन, देवास (मध्य भारत) ।
१०५. प्रेसिडेंट, सिटी बोर्ड, मसूरी ।
१०६. प्रेसिडेंट कन्नापुरम पंचायत बोर्ड, पोस्ट ग्राफिस, चेरुकुन्नू, उत्तर मालाबार ।
१०७. चेयरमेन, ए० पी० एम० सी०, चालीसगांव ।
१०८. श्री केसर सिंह सिधाना, ७४–७६ वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली ।
१०९. सेक्रटरी, टीचर्स, एसोसिएशन हाई स्कूल वरकाला, वरकाला ।
११०. सेक्रेटरी, ऐम्प्लाईज एसोसिएशन, बोकारो कोयला खदान, बरमो ।
१११. हैडमास्टर, हाई स्कूल कडकूर, त्रावनकोर-कोचीन ।
११२. श्री सत्रुखान बेहारा, भंजानगर ।
११३. प्रेसिडेंट ग्रांध्र राष्ट्रीय, विश्व करमोद्यरक संघम्, विजयवाड़ा ।
११४. सेक्रेटरी टाउन सोसाइटी, मगादी ।
११५. श्री शेख शरीफ, कमिश्नर, सलूर नगरपालिका सलूर, ।
११६. जौइंट सेक्रेटरी, बार एसोसिएशन, मांडला ।
११७. श्री के० पी० ए० सुपान, बोरजालेजा के संस्थापक, ग्राई० एन० वाई० एस० ग्रौर ग्राई० एम० एच० एस० खीरानल्लुर, सेम्मानगुडी, पोस्ट ग्राफिस शियाली, दक्षिण भारत ।
११८. प्रेसिडेंट, शोलापुर बार एसोसिएशन, शोलापुर ।
११९. प्रिंसिपल, सनातन धर्म कालिज, सनातन पुरम पोस्ट ग्राफिस, ग्रलेप्पी ।
१२०. प्रिंसिपल, सेंट टामस़ कालिज, त्रिचूर ।
१२१. कुमारी कमलम एम० एस०, बी फार्म, बोर्ड गर्ल्स हाई स्कूल, ग्रलातुर ।
१२२. श्री कृष्णमूर्ति, ग्रभ्रक खनिक, ४६, ग्रम्मेन कुटील, स्ट्रीट मद्रास–१ ।
१२३. प्रिंसिपल, दयाल सिंह कालिज, करनाल ।
१२४. प्रेसिडेंट, सौराष्ट्र जीव दया मण्डल, जगन्नाथ प्लाट, उदानी विल्ला, राजकोट ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२५. प्रिंसिपल, सरयूपारीण इंटर कालिज, इलाहाबाद ।

१२६. प्रिंसिपल, एल० एन० गिरधारी लाल के० यू० हायर सेकेंडरी स्कूल, दिल्ली ।

१२७. हैडमास्टर, बी० ई० स्कूल, मेलापट्टी, कल्ली गुडी, पोस्ट, तिरुमंगलम ताल्लुक, मदुराई जिला ।

१२८. श्री मुल्कराज, प्रेसिडेंट दिल्ली रेड़ी एसोसिएशन, ३६७०, कटरा गरिगारान, कुतुब रोड, दिल्ली ।

१२९. प्रेसिडेंट पलाकोल चेम्बर आफ कामर्स, पलाकोल, वेस्ट गोदावरी जिला ।

१३०. श्री एम० के० घोष, चेयरमेन, टाटा वर्कर्स यूनियन, १७ के० रोड, जमशेदपुर ।

१३१. श्री जी० डी० हीगाभरे, एग्रीकलचरल प्रोड्यूस मार्केट कमेटी कार्यालय, तासगांव, जिला सतारा दक्षिण ।

१३२. प्रेसिडेंट, "कांग्रेस" बड़ौदा, बड़ौदा ।

१३३. श्री ए० एन० सक्सेना, ३२ गुप्ता मार्केट, लखनऊ ।

१३४. प्रिंसिपल विकास विद्यालय, रांची ।

१३५. श्री एस० के० पदालकर, एडवोकेट, हाई कोर्ट, इंदौर ।

१३६. हैडमास्टर, हिन्दी मिडिल स्कूल, परदेसपुरा, इंदौर ।

१३७. प्रिंसिपल, के० के० इंटर कालिज, इटावा ।

१३८. प्रेसिडेंट, नौजीवन सेवक सभा, अमृतसर ।

१३९. सेक्रेटरी, सिटी कांग्रेस कमेटी, सैंधवा, मध्य भारत ।

१४०. प्रेसिडेंट नगरपालिका अमरेठ, जिला कैरा ।

१४१. संघटक, गांधी स्मारक निधि, राजस्थान शाखा, गांव सुवाना, पोस्ट आफिस भीलवाड़ा (राजस्थान) ।

१४२. चेयरमेन, नगरपालिका, मसुलीपटनम् ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ६ :

संसद् भवन के सेंट्रल हाल में उनके चित्र के अनावरण के समय प्रस्तुत की गई श्रद्धांजलियां

[लोक-सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री ग० वा० मावलंकर के चित्र का अनावरण संसद् भवन, नई दिल्ली के सेंट्रल हाल में प्रधान मंत्री द्वारा ७ सितम्बर, १९५६ को किया गया । इस अवसर पर अध्यक्ष तथा प्रधान मंत्री द्वारा दिये गये भाषण नीचे उद्धृत किये जाते हैं]

अध्यक्ष महोदय (श्री म० अ० अय्यंगार) : पंडित जी, डा० राधाकृष्णन और मित्रगण, इस वर्ष के प्रारम्भ काल में लगभग मार्च के महीने में, एक दिन संध्या समय मुझे डा० केसकर ने सूचित किया कि जब दादासाहब जीवित थे तो वे बम्बई के श्री सातवलेकर के सम्मुख कुछ बार अपना एक चित्र खिचवाने के हेतु बैठे थे । उन्होंने मुझे बताया कि श्री सातवलेकर उनके चित्र को उनकी मृत्यु से पूर्व पूरा नहीं कर सके और वह अधूरा रह गया । फिर भी उन्होंने कहा कि श्री सातवलेकर से वह चित्र मिलना सम्भव हो सकता है । श्री सातवलेकर ने उसे पूरा कर दिया और वह चित्र यहां आ गया ।

तब से मैं इस बात का प्रयत्न कर रहा हूं कि यदि हमारे मित्रजन सहमत हों तो क्या उस चित्र को यहां प्रदर्शित करना सम्भव हो सकता है । प्रधान मंत्री तथा डा० राधाकृष्णन् दोनों ने इसे देखा तथा इस बात के लिये सहमत हो गये कि यह यहां प्रतिस्थापित किया जाये ।

यदि यह हाल का चित्र न होता तो स्वभावतः ही हमने और अच्छा चित्र पसंद किया होता । आज, पंडित जी, मैं आपसे इस चित्र का अनावरण करने की प्रार्थना करने जा रहा हूं ।

श्री मावलंकर सन् १९४६ से हमारे साथ रहे । वह यहां विधान-सभा के सभापति के रूप में आये और बाद को संविधान-सभा (विधायिनी) के अध्क्षय रहे । फिर, १९५० में, जब कि भारत गणतंत्र घोषित हुआ, वह अस्थायी संसद् के अध्यक्ष चुने गये । १९५२ में वह पुनः अध्यक्ष चुने गये । इस प्रतिष्ठित पद पर वह १९५६ तक रहे । इस प्रकार १९४६ से १९५६ तक बराबर उन्होंने इस उच्च पद को सुशोभित किया ।

बम्बई में तथा यहां दोनों ही स्थानों पर वह प्रथम अध्यक्ष थे । जब कि कांग्रेस ने १९३७ में प्रथम बार गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट, १९३५ के अन्तर्गत चुनाव लड़े तो वह बम्बई विधान-सभा के सदस्य बन गये सदस्य बनने के बाद शीघ्र ही वह अध्यक्ष निर्वाचित हुये । इस समस्त अनुभव को लेकर वह यहां आये और अपनी योग्यता से यहां पर उन्होंने बहुत यश प्राप्त किया ।

वह इंग्लैंड में राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन तथा राष्ट्रमंडल अध्यक्ष सम्मेलन में गये थे । १९४८ में तथा १९५२ में विभिन्न राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलनों में भी उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया । इस प्रकार उन्होंने समस्त राष्ट्रमंडलीय देशों तथा समस्त विश्व के अग्रतम अध्यक्षों में से एक के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त की । इंग्लैंड में जो भी व्यक्ति उनके सम्पर्क में आया, उसने उनकी प्रशंसा की ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निस्सन्देह, जहां तक व्यक्तित्व का प्रश्न है, उनके बाद आने वाले सभी व्यक्ति पृष्ठभूमि में पड़ जायेंगे। उनका इतना सुन्दर व्यक्तित्व था। इसके साथ थी उनकी महान् योग्यता, उनका प्रजातंत्री जीवन और संसद् के कार्य-संचालन का उनका ढंग। यह सब स्वभावत: ही उनके बाद भविष्य में आने वाले किसी भी व्यक्ति को पृष्ठभूमि में फेंक देगी।

उनका एक महान् व्यक्तित्व था। उन्होंने एक सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया, यद्यपि हमारी कामना थी कि वह तीस वर्ष और जीवित रहते। किन्तु भगवान् को कुछ और ही स्वीकार था। उनका जन्म सन् १८८८ में बड़ौदा में हुआ था। उनकी शिक्षा अहमदाबाद और बड़ौदा में हुई। १९१३ से १९१९ तक उन्होंने वकालत की। १९१९ में वह अहमदाबाद नगरपालिका के सदस्य बने। स्वभावत: ही वह सरदार वल्लभ भाई पटेल के सम्पर्क में आये। १९२१ में वह अहमदाबाद में हुई कांग्रेस की स्वागत समिति में मंत्री थे। १९२१ में वह गुजरात प्रादेशिक समिति के भी मंत्री हुए और १९२३ तक उक्त पद पर रहे।

सामाजिक तथा शिक्षा सम्बन्धी कार्यों में उन्हों ने बहुत रुचि ली। मुझे बताया गया है कि वह अहमदाबाद एजूकेशन सुसाइटी के संस्थापक थे। गुजरात विश्वविद्यालय की स्थापना में भी उनका बड़ा हाथ था। उन्होंने विभिन्न सहायता कार्य किये। अपनी मृत्यु के समय तक भी वह गांधी स्मारक निधि तथा कस्तूरबा ट्रस्ट फंड से सम्बद्ध थे। वह हैदराबाद गये और विशाखापटनम् का भी दौरा किया। स्वास्थ्य खराब होते हुए भी वह इन स्थानों को गये। यह उनके ऊपर रखा जानेवाला अंतिम बोझ था। उन्हें हृदय का दौरा हुआ।

उन्होंने एक प्रतिष्ठित जीवन व्यतीत किया। पंडित जी ने उस दिन ठीक ही कहा था कि वह संसद् के पिता थे। यहां राष्ट्र के पिता हैं। वह संसद् के पिता थे। मैं कहूंगा कि जहां तक कांग्रेस का सम्बन्ध है, और जहां तक भारत का सम्बन्ध है, वह प्रथम अध्यक्ष थे।

अब मैं आपकी ओर से, और अपनी ओर से, पंडित जी से चित्रका अनावरण करने की प्रार्थना करता हूं। वह यहां के समस्त संसद् विज्ञों के लिये एक स्थायी दृष्टांत होंगे। उन्होंने एक बड़ी सीमा तक संसद् की दृढ़ नींव डाली। पंडित जी ने इस देश में प्रशासन की दृढ़ नींव डाली और दोनों ने मिलकर दढ़ प्रजातंत्र की नींव डाली।

पंडित जी गणतंत्र के प्रथम प्रधान मंत्री हैं। दादासाहब मावलंकर हमारे संविधान के अन्तर्गत प्रथम अध्यक्ष थे। अतएव मैं पंडित जी से यहां दादासाहब के चित्र का अनावरण करने की प्रार्थना करता हूं जिससे कि यह बराबर संसद् के समस्त सदस्यों के सम्मुख रहें और यह उन्हें हमारे देश में प्रजातंत्र की दृढ़तर नींव जमाने के लिये प्रोत्साहित करें।

श्री जवाहरलाल नेहरू : सभापति महोदय, अध्यक्ष महोदय, मित्रगण तथा सहयोगीगण, मुझे नहीं मालूम कि आपमें से कितनों को याद है—मैं स्वयं भूल गया था, कुछ मित्रों ने चार दिन हुए मुझे याद दिलाया—कि ठीक दस वर्ष पूर्व, २ सितम्बर को, हम में से कुछ ने यहां दिल्ली में अन्त:कालीन सरकार बनायी थी। जो बाद में स्थापित होने वाले एक स्वतन्त्र प्रशासन की पूर्वगामी थी। दस वर्ष पूर्व हममें से कुछ लोग अन्त:कालीन सरकार में सम्मिलित हुए और उसके परिणाम स्वरूप तत्कालीन विधान-सभा के सदस्य बन गये। अनेक वर्षों तक विपक्ष में रह कर तत्कालीन सरकार से लडते हुए हमने स्वयं सरकार बनायी और इस प्रकार एक परिवर्तन आया। वह सरकार हममें से अनेकों के लिये एक परेशानी का वाइस थी और अंततोगत्वा, लगभग एक वर्ष बाद, भारत स्वतन्त्र हुआ। संसदीय प्रणाली का वह मेरा प्रथम अनुभव था। कुछ समय के लिये मैं विधान-सभा में था, किन्तु मेरा ख्याल है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हममें से अधिकांश ने संसदीय अनुभव कुछ विलम्ब से, संविधान-सभा निर्वाचित हो जाने के बाद, और तत्पश्चात् गत आम चुनावों के बाद, प्राप्त किया ।

इन दस वर्षों के दौरान में देश में बहुत कुछ हो चुका है । इन दस वर्षों में हममें से अनेक ने इस भवन में, अपने जीवन का भाग बिताते हुए, समय व्यतीत किया है । जब हमारे संविधान का निर्माण हुआ था उस समय हमने इस हाल में, और लोक-सभा और राज्य-सभा के हालों में भी बहुत सा समय व्यतीत किया । हमने संविधान बनाया जो कई बार संशोधित किया जा चुका है, किन्तु जो मुझे आशा है आप सहमत होंगे, मूलतः एक निर्दोष संविधान है और जो प्रजातंत्री पद्धति तथा व्यक्ति-स्वातंत्र्य तथा साथ ही साथ सामाजिक प्रगति और सामाजिक न्याय पर आधारित है । हम कहां तक इसका पालन करते हैं, यह भिन्न प्रश्न है, हम यथासम्भव इस बात का प्रयत्न करते हैं ।

तो संविधान बनाया गया और, संसद् में, सब प्रकार के नियम बनाये गये । किन्तु हम सभी जानते हैं कि यद्यपि संविधान का होना और नियमों का होना एक अच्छी बात है, फिर भी कितनी ही ऐसी अन्य बातें हैं जो लिखावट में नहीं रखी जातीं, प्रथायें तथा इसी प्रकार की चीजें जो संसदीय तथा सम्बन्धित कार्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं । उन प्रथाओं का निर्माण कुछ इस बात पर भी निर्भर है कि संसद् में हम लोग किस प्रकार व्यवहार करते हैं । किन्तु, सारतः इन प्रथाओं के निर्माण में सहायता देना जो सर्वोच्च महत्व की है, अध्यक्ष पर या राज्य-सभा के सम्बन्ध में, सभापति पर निर्भर है ।

समस्त पुरानी संस्थायें जैसे कि इंगलैंड की संसद् मुख्यतः प्रथाओं पर निर्भर होती है । अतएव संसद् हमारे लिये बहुत पवित्र है । कुछ लोग वहां की बेकार तड़क-भड़क और रस्मों पर आपत्ति कर सकते हैं, जिनमें से कुछ की हमने नकल की है । कुछ छोटी रस्में हम अदा करते हैं । किन्तु इन रस्मों का एक महत्व होता है । हमें बताया गया था कि एक बार हाउस आफ कामन्स में जब कि अध्यक्ष ने दरी से परे कदम रखे तो "आर्डर, आर्डर" और "यह क्या है ?" की आवाजें सब ओर से आने लगीं । तात्पर्य यह था कि अध्यक्ष द्वारा दरी की सीमा के बाहर कदम न रखे जायें । मैंने पूछा "क्यों ?" मुझे बताया गया कि उन दिनों यह आशंका थी कि तलवारें खिंच जायें और एक दूसरे पर वार हो जायें । इसलिये यह प्रथा विकसित हुई कि वे एक-दूसरे से पर्याप्त अंतर पर रहें और अब उन दिनों की याद किसी को नहीं है और तलवारों का रिवाज अब उड़ गया है । किन्तु प्रथा का वास्तविक तात्पर्य यह था कि संसद् में लोग शिष्टता बर्तें, चाहे वैसे वे एक दूसरे के कितने भी कटु विरोधी क्यों न हों । यह तो लोगों के एक-दूसरे पर प्रहार करने वाली एक असाधारण सी मिसाल हुई । अन्य अनेक दृष्टांत है जिनका कि संसद्-सदस्यों को प्रतिदिन अनुभव होता है—कि बहत्तर भलाई के लिये शिष्टता और सहकारिता का एक स्तर रखते हुए अपना काम किस प्रकार करें अपने तर्कों को किस प्रकार प्रस्तुत करें, यदि एक-दूसरे का विरोध करना हो तो किस प्रकार करें । यह मेरी समझ में संसद्सदस्यों का मुख्य कर्त्तव्य है क्योंकि संसद् में परस्पर विरोधी, विचार परस्पर विरोधी दृष्टिकोण और अभिव्यक्तियां समक्ष आती हैं और उन्हें सामने आना पड़ता है । यदि न आयें तब तो अच्छी बात न हो, क्योंकि एक ही प्रकार का दृष्टिकोण और मत व्यक्त होता रहे । आखिर सत्य की प्रगति महज एक स्पष्ट उक्ति कर देने की अपेक्षा विवाद और तर्क, जांच और पड़ताल, से अधिक होती है । ये सब प्रथायें आदि पुरानी संसदों से सम्बद्ध हैं । सैकड़ों वर्षों के दौरान में वे विकसित हुई हैं तथा लोगों ने स्वतः ही उसका पालन किया है । इन प्रथाओं ने उन्हें ऐसे समय अपना क्रोध रोकने में सहायता की है जब कि वे आपे से बाहर होने वाले थे । ये प्रथायें हमारे यहां नहीं विकसित हुई थीं, हमें अब उन्हें बनाना है, विकसित करना है । मेरा विश्वास है कि हम सफलतापूर्वक ऐसा कर रहे हैं ।

हमारे स्वर्गवासी अध्यक्ष में उन प्रथाओं का निर्माण करने के लिये आवश्यक दूरदर्शिता अपार मात्रा में विद्यमान थीं । हममें से जो लोग संसद् में दादा मावलंकर के कार्य को उतनी ही अच्छी तरह जानते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, जितना कि मैं, वे इस बात को भली भांति समझते हैं। हम उनके कार्य की पहले की सराहना करते थे और अब भी करते हैं, विशेषकर इसलिये कि उन्होंने कितनी अच्छी तरह उन प्रथाओं के निर्माण में सहायता की, और ऐसा करने में हम सब संसद् सदस्यों को नियंत्रित रखा, यदाकदा हमें फटकारा भी, और जब फटकारा तो ऐसे मैत्रीपूर्ण ढंग से, जिस पर किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती थी। तो उन्होंने उस वातावरण के पनपने में सहायता की, जो कि संसदीय कार्य के साथ विकसित होता है, मतभेद का और फिर भी मित्रता का, सहयोग का, सौहार्द का और संयम का वातावरण। यह एक बहुत बड़ी चीज है।

यदि हम इसे बनाये रखें, और मुझे विश्वास है कि हम इसे बनाये रखेंगे तो मैं समझता हूं कि हमारी अधिकतर समस्याओं का निदान चाहे वे कितनी भी कठिन क्यों न हो, सरल हो जायेगी। वास्तव में हम चाहते हैं कि वह वातावरण संसद् तक ही सीमित न रह कर समस्त देश में व्याप्त हो। यही सही वातावरण है और किसी समस्या या किसी तर्क को निपटाने का सभ्य वातावरण है। अन्यथा प्रजातंत्र के क्या अर्थ हैं ? प्रजातंत्र समस्याओं को विचार-विमर्श, तर्क और फिर बहुसंख्यक निर्णय से तय करने का एक सभ्य तरीका है। किन्तु बहुसंख्या को सदा अल्पसंख्या के दृष्टिकोण का ध्यान रखना चाहिये, जिससे कि अल्प संख्या कभी यह महसूस न करे कि उसकी उपेक्षा की गयी है। तो दादासाहब मावलंकर ने जो काम यहां किया वह संसद् के लिये तो महत्वपूर्ण था ही, समस्त देश के लिये यह और भी अधिक महत्व का था। आखिर यह संसद् देश की विधान सभाओं तथा परिषदों के लिये दृष्टांत पेश करती है और इस प्रकार देश के समस्त सार्वजनिक जीवन के लिये एक आदर्श प्रस्तुत करती है।

हमने जो विभिन्न आदर्श स्वीकृत किये हैं उनका पालन करने में हम सफल नहीं हुए है। इस संसद् के बाहर हममें से बहुतों ने उस प्रतिष्ठा, उस सहनशीलता और सहकार की उस भावना के साथ व्यवहार नहीं किया है जो कि संसदीय परम्परायें हम से अपेक्षित करती हैं। किन्तु हमने बहुत प्रगति की है और मुझे विश्वास है कि हम और अधिक प्रगति करेंगे।

मैं अनुभव करता हूं और मुझे विश्वास है कि हमारी संसद् में इन परम्पराओं का निर्माण करने में हमारे स्वर्गीय अध्यक्ष दादासाहब मावलंकर का सबसे अधिक हाथ था। जब वह यहां थे तो हम उन्हें अपने में से ही एक समझ कर इस बात की अनुभूति नहीं कर पाये कि वह इन परम्पराओं का निर्माण करने और देश के विभिन्न भागों से आये विभिन्न मेल के हम लोगों को सभी संसद् सदस्यों को उन परम्पराओं में प्रशिक्षित करने में कितनी महान् और अद्वितीय सेवा कर रहे हैं। विभिन्न प्रकार के लोगों को एक साथ काम करने के लिये एक सी प्रेरणा देना कोई साधारण कार्य नहीं था।

कुछ व्यक्ति किसी विशिष्ट बड़े पद के लिये पैदा होते हैं, कुछ उसे अपनी योग्यता से प्राप्त कर लेते हैं, कुछ पर वह थोप दिया जाता है। दादासाहब मावलंकर के लिये यह कहना उचित होगा कि वह लोक सभा के अध्यक्ष पद के लिये ही पैदा हुए थे। वह इस पद पर सर्वथा उपयुक्त सिद्ध हुए थे और इन कई वर्षों में न केवल अपने विनिश्चयों में अपितु अपने सामान्य व्यवहार में भी उन्होंने सदैव उच्च प्रतिष्ठा और बुद्धिमत्ता को बनाये रखा। वह अपेक्षाकृत बहुत कम शब्दों का प्रयोग करते थे, किन्तु जो कुछ भी शब्द वह कहते वे सारवान् होते थे। इसलिये उनका प्रभाव धीरे-धीरे हमारे—संसद् सदस्यों के—समस्त व्यवहार में और जीवन में व्याप्त हो गया और हममें पर्याप्त सुधार हुआ।

जिस दिन हमें उनकी मृत्यु की सूचना मिली, हमें कई प्रकार से बड़ा आघात पहुंचा। वह हमारे बड़े पुराने मित्र और साथी थे जिनका कि हम सब आदर करते थे। किन्तु उनकी सबसे बड़ी बात यह थी कि वह एक मनुष्य थे, एक प्रकार के शिक्षक थे, जिन्होंने हमें संसदीय प्रथाओं में प्रशिक्षित किया। जैसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने कहा, हमने उन्हें अपने में से ही एक समझा था और तब जब हमने एकाएक यह सुना कि वह प्रस्थान कर गये तो हमें ऐसा महसूस हुआ कि एक रिक्तता आ गई है।

एक दूसरे अर्थ में, एक अन्य अवसर पर, मैंने उन्हें "अपनी संसद् का पिता" कहा था। यह सर्वथा उपयुक्त ही है कि हमारी नई संसद् को या भारत के प्रजातंत्र को जिस व्यक्ति ने एक स्वरूप दिया उसके चित्र को इस हाल में जहां हमारा संविधान निर्मित हुआ था अथवा इस भवन के अन्य भागों में, जहां उन्होंने इतनी प्रतिष्ठा और बुद्धिमत्ता से कार्यवाही का सभापतित्व किया था, एक चिरस्थायी स्थान मिले। अध्यक्ष महोदय, आपने मुझसे दादासाहब मावलंकर के चित्र को अनावरण करने के लिये कह कर मुझे एक आदर प्रदान किया है। मैं बड़े हर्ष के साथ उनके चित्र का अनावरण करता हूं, किन्तु साथ ही साथ मुझे इस बात का खेद भी है कि मुझे या हममें से किसी को ऐसे व्यक्ति के चित्र का अनावरण करना पड़े जिसे कि वास्तव में आज हमारे साथ होना चाहिये था, पर जो अब संसार में नहीं रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ७ :

भारत के विधायी निकायों के पीठासीन पदाधिकारियों के मद्रास में हुए सम्मेलन में अर्पित श्रद्धांजलि

[१७ सितम्बर, १९५६]

भारत के विधायी निकायों के पीठासीन पदाधिकारियों के मद्रास में १७ सितम्बर, १९५६ को हुए सम्मेलन में, सभापति श्री एम० अनन्तशयनम् आय्यंगार, अध्यक्ष लोक-सभा, ने अपने सभापति भाषण से बोलते हुए श्री मावलंकर की स्मृति में निम्नलिखित शब्दों में श्रद्धांजलि अर्पित की :

आज हमारे मध्य एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति, इन समस्त वर्षों के दौरान में इस सम्मेलन के महान्, सभापति, श्री मावलंकर जी, मौजूद नहीं हैं। उनका मोहक और सुगठित व्यक्तित्व, उनका मृदुल स्वभाव, उनकी बहुमूल्य नसीहत और संसदीय प्रणाली तथा प्रक्रिया में उनका परिपक्व अनुभव, वास्तव में उनका समस्त जीवन, दूसरों के लिये अनुकरणीय है। गणराज्य के बनने के बाद वह संसद् के प्रथम अध्यक्ष थे। उनका जीवन विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक कार्यवाहियों से भरपूर था। वह भारत के महान् सुपुत्रों में से एक थे जिन्होंने अपना इतना समय और शक्ति सार्वजनिक कार्यों के लिये समर्पित कर दिया तथा स्वातन्त्र्य संग्राम के दिनों में कारावास का कष्ट सहा। इस देश में संसदीय प्रजातंत्र की दृढ़ नींव डालने के लिये सामान्यतः और पीठासीन पदाधिकारियों के सम्मेलनों के कार्यकरण के लिये विशेषतः हम सब उनके आभारी हैं मुझे विश्वास है कि इस महान् आत्मा को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करने में आप सब मेरे साथ हैं।

M62LS—14-10-57—250MGIPF

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar